भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना के अंतर्गत

परियोजना :

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत योजना के अंतर्गत, बिहार के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के दो तत्व - मिथिला में पञ्जि व्यवस्था" तथा "डाक बचन" - डाटा संकलन का

अंतिम प्रतिवेदन
वर्ष - 2015-16

अछिञ्जल ACHHINJAL
ग्राम+पोस्ट – भूपट्टी, प्रखण्ड – बाबूबरही
ज़िला – मधुबनी, बिहार
e-mail – achhinjal@gmail.com

अछिञ्जल ACHHINJAL

बिहार के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के दो तत्व - मिथिला में पञ्जि व्यवस्था" तथा "डाक बचन"

विषय सूची : -

विषय		पृष्ठ संख्या
1. कार्ययोजना	-	01
2. तत्वों का संक्षिप्त परिचय	–	04
3. खंड एक: संबन्धित तत्वों के काभाषिक क्षेत्र	–	08
4. खंड दो : पञ्जि प्रबंध	-	31
5. खंड तीन : डाक बचन	-	105
6. संबन्धित फोटोग्राफ	–	146
7. संदर्भ व आभार	-	172

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत योजना के अंतर्गत बिहार के अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों की संदर्भ सूची निर्माण हेतु डाटा संग्रह –संदर्भ मिथिला

प्रस्तुत परियोजना के अंतर्गत दो प्रमुख तत्वों को लक्षित किया गया –

1. मिथिला में पञ्जि व्यवस्था (MITHILA MEN PANJI VYAVASTHA)
2. डाक बचन (DAK VACHAN)

प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र राज्य –

मिथिला क्षेत्र, उत्तर बिहार, भारत व तराई क्षेत्र, नेपाल

कार्ययोजना :

मिथिला बिहार के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के दो तत्व – मिथिला में पञ्जी प्रथा व डाक बचन के डाटा संग्रह का कार्य इस परियोजना अंतर्गत किया गया है। विभिन्न चरणों में परियोजना में लक्ष्य अनुरूप कार्य का सम्पादन किया गया। डाटा संग्रह हेतु मिथिला के विभिन्न भागों तथा देश के विभिन्न

भागों में उपस्थित विद्वानों व संबन्धित संस्थानों से यथा संभव संपर्क कर विमर्श किया गया। डाटा संकलन हेतु विभिन्न अंतर्जाल समूहों, सोसल साइटों आदि को भी साधन के रूप में उपयोग किया गया। सीमित संसाधनों के कारण के कारण विभिन्न वेवसाइटों से भी सूचना इकट्ठा किया गया है। मिथिला में उपलब्ध पुराने पञ्जि के कुछ भाग के संरक्षण व डिजिटाइजेशन का कार्य विदेह समूह द्वारा किया गया है। प्रस्तुत रिपोर्ट में कुछ छाया चित्र विदेह के वेवसाईट से भी लिया गया है। समग्र रूप से प्रारम्भिक स्तर पर डाटा व सूचना संकलन के बाद मिथिला के विभिन्न विद्वानों से विमर्श कर दोनों तत्वों के लिए अलग-अलग सेमिनार व परिचर्चा का आयोजन किया गया। डाक बचन के लिए धरोहर श्रृंखला-1 का आयोजन 16 जुलाई 2018 को बाटिका होटल सभागार, मधुबनी बिहार में किया गया। इस आयोजन में प्रमुख आमंत्रित वक्ता - श्री महेंद्र मलंगिया, डा0 कमल कान्त झा, डा0 महेन्द्र नारायण राम, डा0 प्रकाश भारती, प्रो0 (डा0) शशि नाथ झा, श्री अभिषेक देवनारायन, अजित आज़ाद आदि थे। मिथिला के पञ्जि प्रबंध पर केन्द्रित धरोहर श्रृंखला-2 का आयोजन दिनांक 2 सितंबर 2018 को हिन्दी भवन सभागार, दिल्ली में किया गया। इस आयोजन में आमंत्रित विद्वानों में –

पञ्जिकार श्री विश्वमोहन चन्द्र मिश्र, श्री भैरव लाल दास, श्री महेंद्र मलंगिया, डा0 महेन्द्र नारायण राम, श्री संजीव झा, श्री अभिषेक देवनारायन, डा0 सविता झा खान, श्री ऋषि बशिष्ठ, श्री काश्यप कमल, श्री प्रेमशंकर झा, डा0 कैलाश कुमार मिश्र आदि थे।

संस्था द्वारा मिथिला के अमूर्त संस्कृति तत्व – पञ्जि प्रबंध और डाक बचन पर अगले चरण का कार्य अभी भी जारी है। डाक बचन पर विद्वानों में मतभेद को देखते हुए एक सात दिनों के कार्यशाला का आयोजन किया जाना है उसके बाद सभीतत्यों के साथ उसे पुस्तकाकार दिए जाने की योजना है। पञ्जि प्रबंध को संकलित कर उसे डिजिटाइजेशन और उसके सरलीकरण और पञ्जि प्रबंध के लिए एक सॉफ्टवेयर के निर्माण की दिशा में कार्य किए जाने की योजना है।

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत योजना के अंतर्गत निर्देशित बिन्दुओं के अनुसार प्रस्तुत्त परियोजना रिपोर्ट को तीन खंडों में प्रस्तुत्त किया जा रहा है, जो इस प्रकार है :

1. खंड – एक : पञ्जि प्रबंध और डाक बचन से सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा, उपभाषा तथा बोली का विवरण।
2. खंड – दो : पञ्जि प्रबंध
3. खंड – तीन : डाक बचन

परियोजना में शामिल अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्वों का संक्षिप्त परिचय :

1. मिथिला में पञ्जि व्यवस्था :

प्रारम्भ में पञ्जि प्रबंध की शुरुआत जातिगत शुद्धता के उद्देश्य से किया गया था खासकर ब्राह्मण, कायस्थ, क्षत्रिय वर्ग के लिए। आगे चलकर या कहीं कहीं अन्य जाति के लिए भी इस प्रकार का प्रावधान किया गया था। इस प्रक्रिया का उद्देश्य किसी भी व्यक्ति के जातिगत शुद्धता को जानना था। जो एक विशेष परिचय, जिसे "उतेढ़" कहा जाता हैं, के आधार पर समाज में व्यक्ति आपस में बेटी-रोटी का व्यवहार करते थे।पञ्जि व्यवस्था के अनुसार उतेढ़ जानने के लिए किसी व्यक्ति के बातीस कूल या वंश का परिचय जानना आवश्यक है। जिसमें पितृ पक्ष

के पिता, पितामह, वृद्धह प्रपितामह, अतिवृद्धह प्रपितामह आदि सहित सात पीढ़ी तथा मातृ पक्ष में मातामह व मातामही के पितामह व पितामही; और माता के मातामही के पिता व पितामह आदि का परिचय समाहित होता है। इस प्रकार के परिचय की गणना खासकर विवाह के समय किया जाता है। विवाह के लिए लड़का और लड़की के लिए इस प्रकार गणना से निकले उतेढ़ में बातीस कूल के परिचय में लड़का कम से कम सातवीं तथा लड़की पाँचवीं पीढ़ी की दूरी होना आवश्यक है।

2. डाक बचन :

हिंदू धर्म-ग्रंथों के अनुसार समाज को कर्म के आधार पर विभाजित किया गया आता जो बाद में यह जन्माधारित हो गया। वर्तमान में हिंदू समाज में इसी का विकसित रूप जाति-व्यवस्था के रूप में देखा जा सकता है। जाति एक अंतर्विवाही समूह है। प्राचीन भारत में वर्ण व्यवस्था अथवा चतुर्वर्ण व्यवस्था के अतिरिक्त पेशा अथवा व्यवसाय के नाम के अनुसार जाति व्यवस्था भी प्रचलित थी। वस्तुतः पेशा अथवा

व्यवसाय के नाम को ही जाति की संज्ञा दी गयी थी, जिसके अनुसार लोहा का काम करने वाले को लोहार, चमडा का काम करने वाले को चमार (चर्मकार), लकडी का काम करने वाले को बढई, मिट्टी का बर्तन बनाने वाले को कुम्हार (कुम्भकार), गाय (गौ) पालन करने वाले को ग्वाला की संज्ञा दी गयी ।

डाक बचन मिथिला क्षेत्र का सर्वप्रमुख मौखिक लोक परम्परा है। सैकड़ो वर्षों तक वाचिक स्वरूप में रहने के बाद इसके कुछग -कुछ अंश अलग-समय और विद्वानों ने प्रकाशित भी किया है। कुछ विद्वानों का मत है कि 'डाक बचन' गोपकान्या और पंडित बराहमिहिर के पुत्र "डाक" की रचना हैं तो कुछ विद्वान इसे विकसित लोक परम्परा मानते हैं। प्राप्त श्रोतों के अनुसार समस्त भारत वर्ष में डाक के लाखों बचन प्रसिद्ध है। मिथिला के लोक जीवन मेँ डाक बचन का कमोवेश वही मान्यता है जो भारतीय संस्कृति मेँ भगवद्गीता का है। लोक जीवन के दैनिक चर्या मेँ होने वाली समस्याओं व प्रकरणों – गृहस्थ, खेती, वर्षा, वर्षफल, गृहस्थाधर्म, यात्रा, संस्कार, स्वास्थ्य आदि पर डाक की दृष्टी फकड़ा दोहा) के रूप में) "डाक बचन" मेँ मिलती है। आमजन अपनी जीवनचर्या में जैसे

भगवद्गीता, कबीर, चाणक्य आदि से संदर्भ लेते हैं उसी प्रकार मिथिला के लोग डाक का संदर्भ लेते हैं। प्राचीन मैथिल समाज अपने जीवनचर्या में डाक के दर्शन को समाहित करते थे और डाक बचन सभी के कंठ में था। प्राचीन काल में समाज के जीवन यापन का मुख्य और एकमात्र स्रोत कृषि व पशुपालन था। मैथिल लोक जीवन तथा कार्य व्यापार में लोक रत्न डाक के बचन में यहां की माटी पानी से जड़े आहार व्यवहार, सुखाड़, बाढ़, पेड़ पौध रोपण, बैल खरीदने, उपचार नुस्खा, वास्तु संबंधी घर तैयारी में मुहुर्त, शकुन, उपनयन, मुंडन, बच्चों के पालन पोषण एवं शिक्षा आदि लोकोक्ति, काव्यमय टिप्पणी आज भी प्रासंगिक है। डाक का समय 14 शताब्दी से पूर्व का बताया गया है। जानकारों में यह विवाद है कि डाक कहां के थे। कारण ग्रामीण कवित्त लोकोक्ति की पंक्तियां डाक, घाघ, डंक, भादर इत्यादि रूप में पूरे भारत वर्ष में अनेक प्रांत के कई भाषाओं यथा बंगला विश्वकोश, कनौजिया गोरखपुरिया, राजपुतानियां इत्यादि में भी देखा गया है। मिथिला में किसानों के कंठ से उनके मूल वाणी का प्रस्फुटन अनायास निकल पड़ता है जो उस समय की जरूरत होती है।

खंड – एक :

पञ्जि प्रबंध और डाक बचन से सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा, उपभाषा तथा बोली का विवरण

भाषिक क्षेत्र - सम्पूर्ण मिथिला (MITHILA)

पौराणिक नाम - तिरहुत

भाषा - मैथिली (MAITHILI) अंगिका (ANGIKA) व बज्जिका (BAJJIKA)

बोली - पांच प्रकार – श्रोतीय मैथिली, मानक मैथिली, निम्नवर्गीय, मुसलमानी व साधुकरी मैथिली

उपभाषा/बोली - मैथिली के प्रमुख पाँच उपभाषा या बोली हैं –

अ. केन्द्रीय बोली

आ. पूर्वी बोली

इ. दक्षिणी बोली

ई. पश्चमी बोली

उ. उत्तर-पूर्वी बोली

मैथिली भाषा के क्षेत्रगत, जातिगत, संबंधगत आदि प्रकार से अलग-अलग भिन्नता पायी जाती है। इन भिन्नताओं के मद्देनजर, डा0 ग्रीयर्सन, महेंद्र मलांगिया जैसे विभिन्न विद्वानों व भाषाविदों द्वारा किए गए अध्ययन के आधार पर हम मैथिली को निम्न पाँच वर्गो मे विभाजित कर सकते हैं:

क). भौगोलिक विविधताएं –

अ. केन्द्रीय बोली - भारत के मधुबनी, दरभंगा, सुपौल, सहरसा, आदि क्षेत्र् एवं नेपाल के जनकपुर, वैदेही आदि क्षेत्र

आ. पूर्वी बोली-मिथिला के कोसी नदी से पुरब के कुछ क्षेत्रें जैसे-सहरसा, पुर्णियाँ, कटिहार, अररिया, मधेपुरा आदि|

इ. दक्षिणी बोली (अंगिका)-मिथिला के अंग क्षेत्र् भागलपुर, मुंगेर आदि में बोले जाने वाली मैथिली|

ई. पश्चमी बोली (बज्जिका)-मिथिला के पश्चमी भागों के क्षेत्र् जैसे मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, चम्पारण एवं आस पास के नेपाल तराई के क्षेत्र।

उ. उत्तर-पूर्वी बोली (थरूहट) – दक्षिण-पूर्व नेपाल के तराई एवं उत्तर-पूर्व बिहार के मिथिला क्षेत्र् में बोली जाने वाली मैथिली|

ख). जाति एवं वर्णगत विविधताएं –

मिथिला क्षेत्र् में भाषिक दृष्टिकोण से किये गये अध्ययन से पता चलता है कि यहाँ एक ही गाँव जिसका क्षेत्रफल 5-7 वर्ग किलोमीटर है, में यदि अलग-अलग जाति, वर्ण के लोग रहते हैं तो उनकी बोली अलग-अलग है| जैसे मानक मैथिली, श्रोतिय मैथिली, ठेंठ मैथिली, मुसलमानी मैथिली, निम्नवर्गीय मैथिली, और साधुकरी मैथिली।

ग). लिंगगत विविधताएं –

मिथिला में पुरुष एवं स्त्री एक ही घर में रहते हुए भी बार्तालाप में एक-दूसरे को सम्बोधन अलग-अलग तरह से करते हैं। कुछ शब्दों का इस्तेमाल स्त्रीगण तकिया कलाम जैसे करती हैं| जैसे-म'र, धुर'जो! गे दैया! आदि|

घ). संबंधगत विविधताएं -

मिथिला के क्षेत्रें में कुछ संबंधों के बीच बातचीत की भाशा अलग होती है| जैसे ससुर-दामाद, सास-दामाद, ससुर-बहू (पुतोहु), सास- बहू (पुतोहु), जेठ (भैंसुर)-बहू (भाबहु) इत्यदि| इन संबंधगत विविधताओं को इस प्रकार समझा जा सकता है|

<u>ससुर-दामाद का संवाद</u> -

ससुर – हिनका गाम में सेहो रौदी छैन्ह ?

(मानक मैथिली – आहांक गाम में रौदी अछि ?)

(हिन्दी - आपके गाँव में अकाल है?)

दामाद - हँ, सौंसे रौदिये छै|

(मानक मैथिली - हँ, सबठाम रौदिये छै|)

(हिन्दी - हाँ, हर जगह तो अकाल ही है|)

<u>सास-बहू के बीच संवाद</u> -

सास - कनियाँ, खाउ ने|

(हिन्दी - बहू खा लो|)

बहू - हम खेलियैन्ह, इ सुइत रहथु|

(मानक मैथिली - हम खेलहु, आहाँ सुइत रहू|)

(हिन्दी - मैने खा लिया आप सो जाइए|)

मिथिला क्षेत्र में भी एक ही गाँव जिसका क्षेत्रफल 5-7 वर्ग किलोमीटर है, में यदि अलग-अलग जाति, वर्ण के लोग रहते हैं तो उनकी बोली अलग-अलग है| वैसे तो कहा गया है "पाँच कोस पर भाषा बदलै आ दस कोस पर पानि"| कहावत अक्षरश: सत्य है पाँच कोस की दुरी पर भाषा का टोन बदल जाता है कुछ शब्दों का उच्चारण बदल जाता है

या फिर लिंग, प्रत्यय, उपसर्ग आदि बदल जाते हैं| जैसे मधुबनी जिला के भटसिमर गाँव में सर पर टोकड़ी में सब्जी बेचने वाली को 'कुँजरनी' कहा जाता है परन्तु उसी जिले के बरहा गाँव जो कि 10 कोस (30 किलोमीटर) पश्चिम में है, वहाँ 'कुँजरनी' को 'कबारनी' कहा जाता है| किसी चीज को नष्ट करने को ''हेरा गेलै'' को ''जियान भ गेलै'' कहा जाता है| इस तरह कई शब्द बदल जाते हैं|

सम्पूर्ण मिथिला (भारत एवं नेपाल) में भाषागत अध्ययन करने के बाद मैथिली भाषा को जातिगत तथा वर्णगत आधार पर वर्गों में विभेद कर सकते हैं -

1. मानक मैथिली :- वर्तमान में बोल-चाल एवं आधुनिक में मैथिली साहित्य में उपयुक्त होने वाली मैथिली| मुख्य रूप से जयबार ब्रह्मण, कायस्थ, राजपूत, यादव, आदि आर्थिक एवं शिक्षा सम्पन्न जातियों द्वारा बोल जानी वाली मैथिली|

2. श्रोतिय मैथिली :- उच्च ब्राह्मण वर्ग (सम्पूर्ण ब्रह्ममण नही) जिनका सम्बन्ध स्थानीय राजा, जमीनदार आदि के वंशज से हैं जिन्हें श्रोतिय मैथिली ब्राह्मण कहा जाता है, के द्वारा बोले जाने वाली मैथिली| मुगल काल के उत्तरार्द्घ में मैथिली साहित्य में लक्ष्मी नाथ गोसाई का अधिकतर रचना इसी श्रोतिय मैथिली के और भी कठिन शब्दों में है|

3. ठेंठ मैथिली : - मिथिला के सुदूर गाँव देहात में रहने वाले वर्गों के लोगों द्वारा बोले जाने वाली मैथिली|

4. मुसलमानी मैथिली :- मिथिला क्षेत्र के मुसलमानों द्वारा बोले जाने वाली मैथिली| यह बोली मिथिला के दरभंगा, मधुबनी एवं नेपाल के तराई क्षत्रों में रह रहे मुसलमानों द्वारा बोले जाने वाली बोली है|

5. निम्नवर्गीय मैथिली :- मिथिला में रह रहे निम्न जाति जैसे चमार, दुसाध, डोम, हलखोर, कियोट तुरहा, भेडिहर, अशिक्षित गुआर,

मलाह, मुसहर, धोबी, ठठेरी, हलुवाई, हजाम आदि जातियों द्वारा बोले जाने वाली मैथिली है|

6. साधुकरी मैथिली :- मिथिला क्षेत्र् से बाहर के साधु/सन्यासी मिथिला आकर अपना मठ/मण्डली/गोल बना लेने के बाद स्थानीय लोगों को चेला बना लेते थे| उन्ही साधु सन्यासी द्वारा बोली जाने वाली मैथिली भाषा|

यदि एक ही गाँव में अलग-अलग वर्ग के लोग रहते हैं तो उनकी बोली अलग-अलग तरह कि होती है जिसे इस प्रकार समझा जा सकता है :

हिन्दी :- मैं और राम दोनों आदमी कल कोलकाता गए थे।

मानक मैथिली :- हम और राम दुनू आदमी काइल्ह कोलकाता गेल छलियैक।

श्रोतिय मैथिली :- हम आ राम दुनू आदमी काईल्ह कोलकाता जाईत भेलियै।

ठेंठ मैथिली :- हम आ राम दुनू गोटे काईल्ह कोलकाता गेल छलियै|

मुसलमानी मैथिली: हम आ राम कल कोलकाता गया रहलियै|

निम्न वर्गीय मैथिली: हम आ राम दुनू गोरा काईल्ह कलकाता गाएल छलियै|

साधुकरी मैथिली : हम आ राम काईल्ह कोलकाता गया था है|

इस तरह मिथिला के विभिन्न क्षेत्रें में जैसे कोसी, मधुबनी, अंगिका, बज्जिका, एवं मधेस (नेपाल) आदि में शब्दों का उच्चारण, उपसर्ग, प्रत्यय आदि बदल तो जाता है परन्तु उन क्षेत्रों में भी जातिगत भाषाओं का प्रभाव इसी तरह का है|

<u>लिपि :</u> मैथिली भाषा का मूल लिपि मिथिलाक्षर है जिसे तिरहुता लिपि के नाम से भी जाना जाता है। वर्तमान में मुख्य रूप से मैथिली देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती है।

मिथिलाक्षर या तिरहुता लिपि में भी कालांतर में कुछ परिवर्तन देखने को भी मिलता है।

<u>प्राचीन मिथिलाक्षर या तिरहुता लिपि</u> –

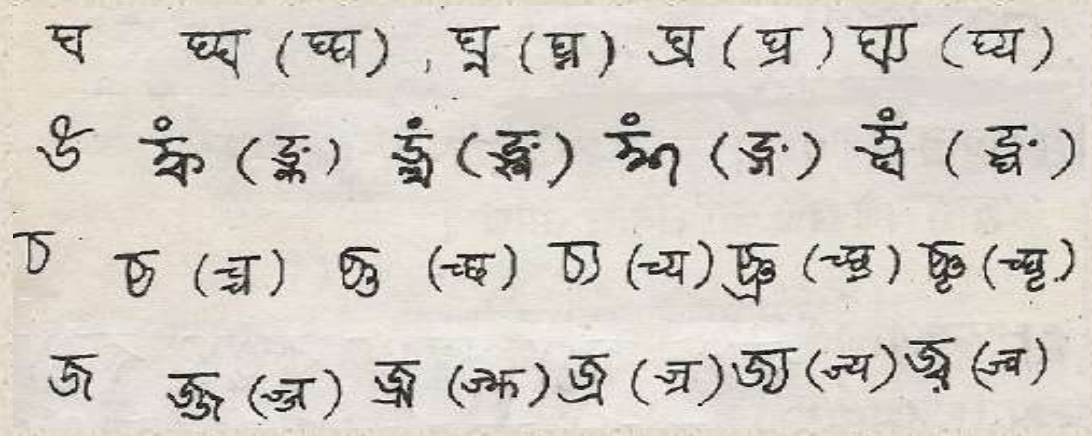

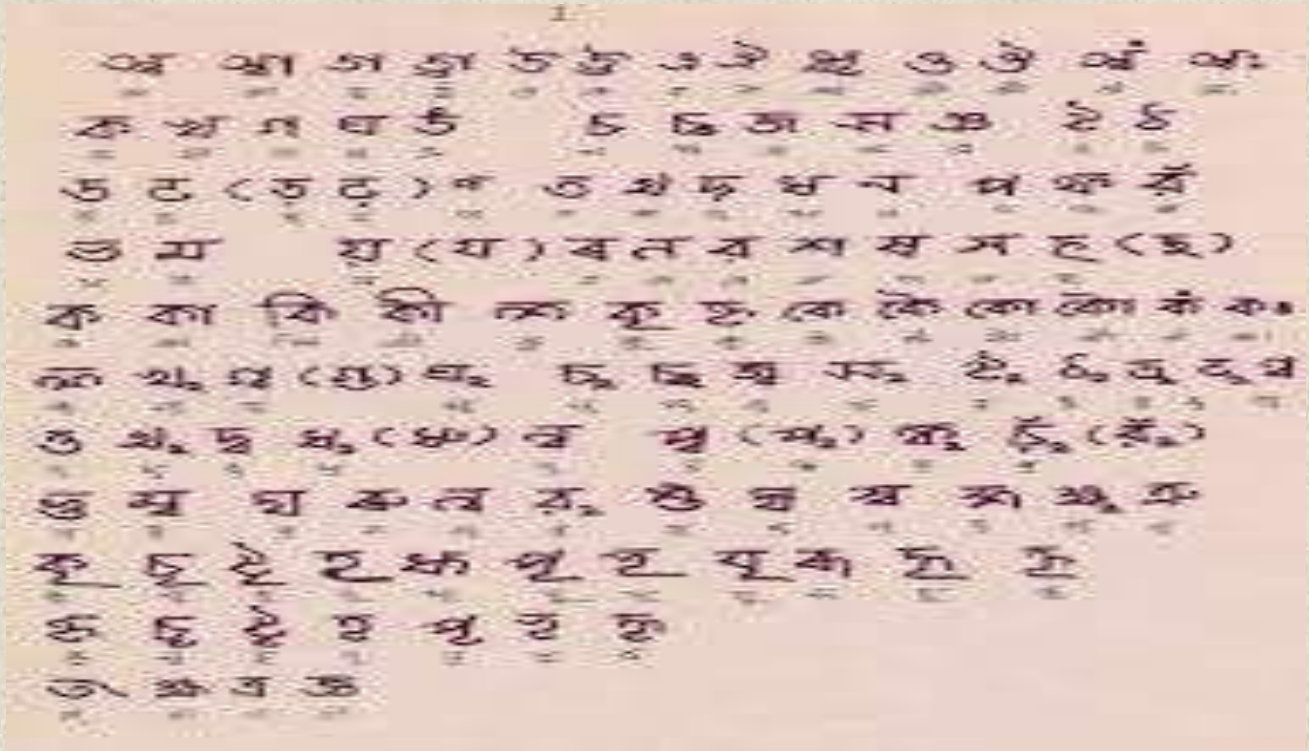

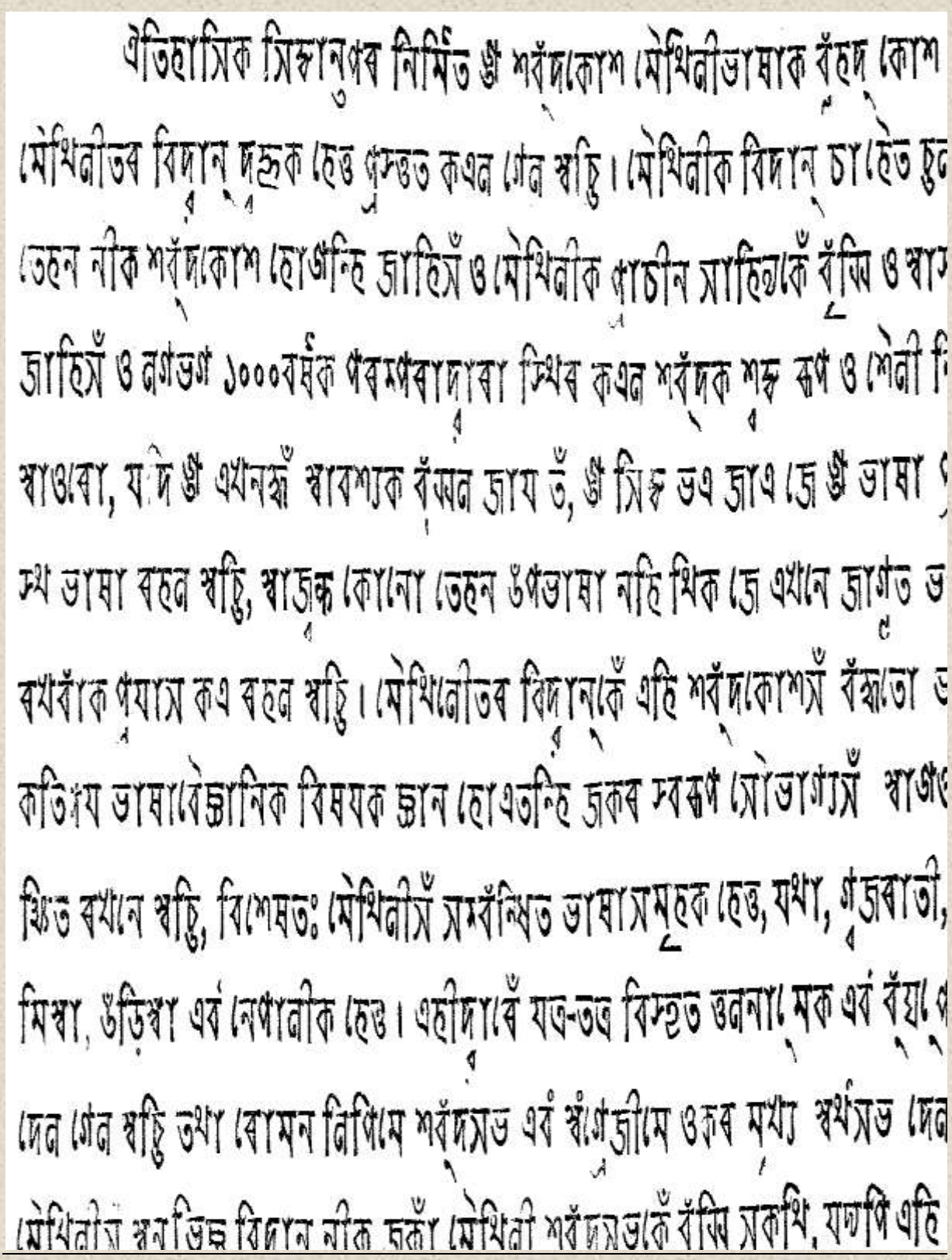

तिरहुता या मिथिलाक्षर मे रचित साहित्य का अंश –

मिथिलाक्षर या तिरहुता लिपि के प्रचलित वर्तमान स्वरूपों में से एक –

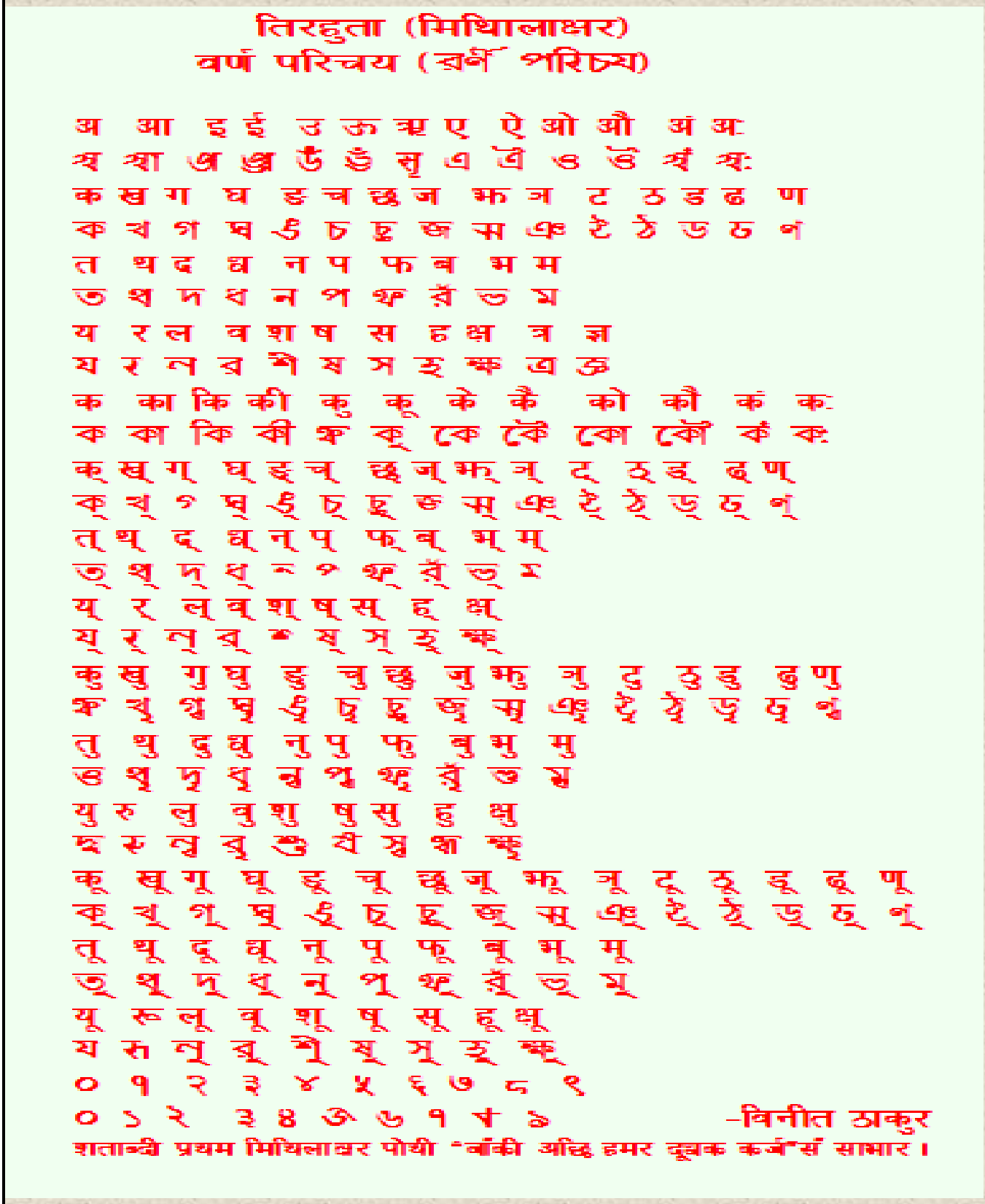

									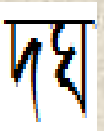
kkô	ńkô	lkô	ṣkô	sphô	ñkhô	skhô	ńgô	ńghô	dghô
									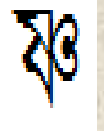
ścô	cchô	ñchô	ñjô	jñô	lṭô	ṇthô	ṣthô	ṇḍô	ṣṇô
									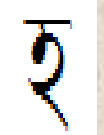
hnô	kṇô	ptô	stô	ktô	gnô	mnô	śnô	snô	hnô
									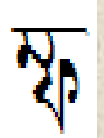
tthô	nthô	ṣthô	ndô	bdô	mpô	lpô	ṣpô	spô	mphô
ṣphô	dbô	mbô	hbô	dbhô	mbhô	kmô	dmô	hmô	mmô

www.omniglot.com

वैसे तो मिथिलाक्षर लिपि अनेक स्थानों पर उपलब्ध है परंतु इसका प्राचीनतम नमूना दरभंगा जिले के कुशेश्वरस्थान के निकट तिलकेश्वरस्थान के शिवमन्दिर में है। इस मन्दिर में पूर्वी मागधी प्राकृत में लिखा है कि मन्दिर 'कात्तिका सुदी' (अर्थात कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा) शके 125 (अर्थात 203 ई.) में बना था। इस मन्दिर की लिपि और आधुनिक तिरहुता लिपि में बहुत कम अन्तर है। किन्तु 20वीं शताब्दी में क्रमश: अधिकांश मैथिल लोगों ने मैथिली लिखने के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया। किन्तु अब भी कुछ पारम्परिक ब्राह्मण (पण्डित) 'पता' (विवाह आदि से सम्बन्धित पत्र) भेजने के लिये इसका प्रयोग करते हैं। सन् 2003 ईसवी में इस लिपि के लिये फॉण्ट का विकास किया गया था। अब तक कई नामों से मिथिलाक्षर का फॉन्ट बन चुका है। यह लिपि बंगला लिपि से मिलती-जुलती है किन्तु उससे थोड़ी-बहुत भिन्न है। यह पढ़ने में बंगला लिपि की अपेक्षा कठिन है।

मिथिला का भौगोलिक क्षेत्र एवं विरासत -

मिथिला के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्व "मिथिला में पञ्जि व्यवस्था" तथा "मौखिक परम्परा डाक बचन" का विस्तार क्षेत्र सम्पूर्ण मिथिला है। सम्पूर्ण मिथिला से तात्पर्य है भारत और नेपाल दोनों तरफ के मिथिला का। ज्ञातव्य हो की वर्तमान में मिथिला दो असीम भागों में विभक्त हो चुका है। यहाँ यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि मिथिला का केवल राजनीतिक रूप से बिभाजन हुआ है। सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से मिथिला आज भए एक सूत्र में ही बंधा हुआ है।

मिथिला एक परिचय –

वर्तमान उत्तर बिहार और तराई क्षेत्र नेपाल के भू-भाग का नाम "मिथिला" था। मिथिला प्राचीन भारत में एक राज्य था। मिथिला का इतिहास विदेह (अनुमानत: 3000 ई. पू.) से माना जाता है। विदेह के बाद मिथिला में नाग, नंद, मौर्य, शुन्ग, काण्व, आंध्र, कुशान, नाग, गुप्त, वर्धन, पाल गुर्जर, चंदेल, आदि के बाद कर्णाट वंश और फिर ओईनवार वंश का (अनु. 1353 स' 1526 ई.) शासन हुआ।

कई सदियों से चली आ रही लोकश्रुति परंपरा के कारण यह क्षेत्र बौद्धिकता के लिये भारत और भारत के बाहर विशेष रूप से जाना जाता रहा है। इस क्षेत्र कि प्रमुख भाषा मैथिली है। धार्मिक ग्रंथों में सबसे पहले इसका उल्लेख रामायण में मिलता है। मिथिला का उल्लेख महाभारत, रामायण, पुराण तथा जैन एवं बौद्ध ग्रन्थों में देखने को मिलता है।

पौराणिक प्रमाण :

जाता सा यत्र सीता सरिदमल जला वाग्वती यत्रपुण्या।

यत्रास्ते सन्निधाने सुर्नगर नदी भैरवो यत्र लिङ्गम् ॥

मीमांसा-न्याय वेदाध्ययन पटुतरैः पण्डितेमर्ण्डिता या।

भूदेवो यत्र भूपो यजन-वसुमती सास्ति मे तीरभुक्तिः ॥

रामायण में उल्लिखित है कि माता सीता की उत्पत्ति भूमि तिरहुत अर्थात् वैदिक मान्यता के अनुसार तीन वेद के (ऋग्वेद, सामवेद,

यजुर्वेद) ज्ञाता अथवा त्रिवेद से आहुति देनेवाला जिस भू-भाग पर निवास करते हैं वो निर्मल जल से परिपूर्ण और मीमांसा-न्याय वेदादि अध्ययन में पटु से पटुतर -विद्वत मनीषि सुशोभित जिस भू-भाग के शासक यज्ञकर्त्ता पण्डित हैं वह तिरहुत धन्य है।

देशेषु मिथिला श्रेष्ठा गङ्गादि भूषिता भुविः।

द्विजेषु मैथिलः श्रेष्ठः मैथिलेषु च श्रोत्रियः ॥

गङ्गा-कोशी - गण्डकी-कमला-त्रियुगा-अमृता-वागमती-लक्ष्मणा आदि नदी से भूषित मिथिला के श्रेष्ठता वेद-पुराण-उपनिषद-दर्शन और ऋषि प्रमाण से सर्वथा प्रमाणित है। इस प्रान्त की सभ्यता-संस्कृतिक प्राचीनता स्वतः सिद्ध होती है। षड्दर्शन (न्याय-वैशेषिक-सांख्य-योग-मीमांसा-वेदान्त) मे से चार दर्शन के उद्भव स्थली मिथिला अनेक मैथिल महापुरुष के सुदीर्घ मणिरत्न की परम्परा से पूर्ण है। अपने मानसमंथन से मैथिल मनीषीगण जो कुछु भी प्राप्त किए हैं वह समग्र विश्व के लिए अनुकरणीय है। मिथिला के वैशिष्ट्य एवं प्रशस्ति मूलक श्लोक में तीरभुक्ति (तिरहुत) महात्म्य वर्णित है। देवी भागवत में

मिथिला की प्रजा के सदाचार और समृद्धि का मनोरम वर्णन किया गया है।

मिथिला में कर्णाट वंशीय (क्षत्रिय वंश) के अन्तिम राजा पञ्जी प्रवर्तक महाराज हरिसिंह देव के अनुसार मिथिला के क्षेत्र में विराजमान 'सरिसब' में ग्यारहवीं शताब्दि के पूर्वार्द्ध भाग में सामवेद कौथुम शाखा के शाण्डिल गोत्रीय महामहोपाध्याय रत्नापाणि के निवास का वर्णन मिलता है। वह हरिसिंह देव के समय तेरहवीं शताब्दी के माने जाते हैं। विष्णु पुराण और हरिवंश पुराण मे स्यमन्तक मणि उपाख्यान मे श्री बलभद्र के मिथिला प्रवास का वर्णन मिलता है।

श्लाघ्यास्पदं यद्यपि नेतरेषा मियंकृतिः स्वादुहायोऽया।

तथापि शिष्यै गुरुगौरवेन परः सहस्त्रैः समुपासनीया ॥

श्री शंकर मिश्रक विरचित श्लोक "रसार्णव" नाम से प्रसिद्ध है। पिता पुत्र सतत् "काव्य शास्त्र विनोदेन कालोगच्छति धीमताम्" को सार्थक करते

हुए शास्त्र चर्चा में मग्न रहते थे। श्री शंकर द्वारा रचित "वैशेषिक सूत्रोपस्कार" में सूत्रकार कणाद आ अपने पिता भवनाथ (अयाची) मिश्र के स्मरण करते हुए लिखते हैं :

याभ्यां वैशेषिके तन्त्रे सम्यक् व्युत्पादितोऽस्यहम्।

कणाद भवनाथा भ्यां ताभ्यां मम नमः सदा ॥

श्री शंकर मिश्र के विद्वत्ता का प्रतीक उनके पाठशाला का नाम 'चौपाड़ि' था। इस चौपाड़ि पर उद्भट से उद्भट विद्वान आते थे और सतत् शास्त्रार्थ चलता रहता था। दूर-दूर से अध्ययनार्थी इस पाठशाला में अध्ययनार्थ आते रहते थे। अयाची शंकर की महिमा समग्र विश्व में प्रसरित है। अभी भी इस परिवार के वंशज केवल भारत वर्ष में ही नहीं अपितु समग्र विश्व में प्रसारित होकर अध्यवसायी जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

प्राचीन मिथिला –

महाराज दरभंगा के समय का मिथिला

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्व "पञ्जि व्यवस्था" तथा "मौखिक परम्परा डाक बचन" का विस्तार क्षेत्र के बारे में जानने के लिए हमें दोनों तरफ

(भारत और नेपाल) के मिथिला क्षेत्र के भौगोलिक विस्तार को समझना होगा। कालांतर में कई राजनीतिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों के दौर से सम्पूर्ण उपमाहाद्वीप गुजारा है। इसका प्रभाव मिथिला पर भी पड़ा है। अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के इन दो तत्वों का प्रभाव भारत के मिथिला क्षेत्र में उत्तरी बिहार के लगभग सत्रह जिले - मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, शिवहर, चंपारण, मुजफ्फरपुर, वैशाली, सहरसा, पूर्णिया, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, बेगूसराय, भागलपुर, मुंगेर हैं, राजनीतिक मानचित्र इस प्रकार है:

भारत का मिथिला क्षेत्र

नेपाल के नेपाल क्षेत्रीय मिथिला के ग्यारह ज़िले – सप्तरी, सुनसरी, मोरङ, परसा, बारा, रौतहट, सरलाही, महोत्तरी, धनुषा, सिरहा और झापा में है। इसे मानचित्र पर समझा जा सकता है:

Parsa
Bara
Rautahat
Sarlahi
Mahottari
Dhanusha
Siraha
Saptari
Sunsari
Morang
Jhapa

Distric Map of Nepal
N
CHINA
(Tibet)
INDIA
(Uttar Pradesh)
INDIA
(Bihar)
INDIA
(Sikkim)
Humla
Bajhang
Mugu
Bajura
Jumla
Dadeldhura
Doti
Achham
Kalikot
Dolpa
Kanchanpur
Mustang
Kailali
Jajarkot
Rukum
Surkhet
Manang
Myagdi
Bardia
Salyan
Rolpa
Baglung
Kaski
Gorkha
Lamjung
Banke
Pyuthan
Rasuwa
Dang
Gulmi
Syangja
Tanahu
Nuwakot
Sindhupal chok
Palpa
Dhading
Dolkha
Sankhuwasabha
Kapilbastu
Nawalparasi
Solukhumbu
Rupandehi
Chitwan
Makwanpur
Palanchok
Taplejung
Parsa
Sindhuli
Bhojpur
Bara
Sarlahi
Rautahat
Udayapur
Siraha
ILam
Mahottari
Morang
Saptari
Sunsari
Jhapa
Map not to Scale
Copyright © 2006 Compare Infobase Limited

खंड – दो : पञ्जि प्रबंध

बिहार के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्व : मिथिला में पञ्जि प्रबंध

<u>मिथिला में पञ्जि प्रबंध का उद्भव</u> :

1326 ईसवी में मिथिला के कर्णाट वंश के राजा हरिसिंह देव के काल में मिथिला में औपचारिक रूप से पञ्जि व्यवस्था लागू तथा लिपिबद्ध किया गया। मिथिला के तत्कालीन समाज में एक घटना के बाद पञ्जि व्यवस्था की आवश्यकता महसूस की गई। यह दुर्घटना तत्कालीन मिथिला राज्य के उत्तर सतघरा और देवहार गाँव, जो वर्तमान में उत्तर मिथिला (भारत) के मधुबनी ज़िले के बाबूबरही और अंधराठाढ़ी प्रखण्ड में स्थित है। इस घटना की कहानी इस प्रकार है:

मिथिला के सतघारा ग्राम में हरिनाथ मिश्र नाम के एक पंडित जी रहते थे। वो चार भाइयों में सबसे छोटे थे। उनके तीन बड़े भाई मूर्ख थे तथा

बात-बात पर हरिनाथ मिश्र को लज्जित करते रहते थे। एक दिन किसी बात पर उन्हें अपने भाइयों द्वारा कुबचन बोला गया और हरिनाथ मिश्र बहुत अपमानित महसूस किए। पंडित हरिनाथ मिश्र व्यथित होकर घर छोड़कर कहीं दूर देश चले गए।

सतघारा गाँव के नजदीक देवहार नामक गाँव में बाबा मुक्तेश्वर नाथ महादेव का मंदिर है। हरिनाथ मिश्र की पत्नी अपने पति के चले जाने के कारण बाबा मुक्तेश्वर की त्रिकाल पूजा शुरू किया। सतघारा और देवहार गाँव के बीच एक जंगल था जिसमे "भिखना" नामक एक चांडाल रहता था। वर्तमान में सतघरा और देवहार नामक गाँव मधुबनी ज़िला में विद्यमान है तथा आज भी देवहार पंचायत में भिखना नामक एक टोला है। भिखना नामक चांडाल रोज़ पंडितानि को अकेले माहादेव की पूजा करने जाते हुए देखता था। भिखना नामक चांडाल पंडितानि के ऊपर आसक्त हो गया तथा लगातार पंडितानि का पीछा करना शुरू किया। भिखना ने अपने मित्र-मंडली में यह बात फैला दिया की पंडितानि भी उस पर आसक्त हैं। बरसात के मौसम में एक

दिन पंडितानि जब पूजा करने के लिए सतघारा से देवहार मंदिर जा रही थी उसी समय उस चांडाल पंडितानि का पीछा करते हुए मंदिर तक पहुँच गया। पंडितानि पूजा करने लगी। बरसात के कारण मंदिर के आस-पास कोई नहीं था। पूजा समाप्त होने के बाद भिखना ने मंदिर के अंदर ही पंडितानि के साथ दुर्व्यवहार करने का प्रायस किया। तभी शिवलिंग से एक नाग निकाला जिसे देखकर भिखना नामक चांडाल बाहर भाग गया। उसी समय ज़ोरों से वर्षा प्रारम्भ हो गया और सारी रात बरसते रहा। पंडितानि वर्षा के कारण सारी रात मंदिर में ही रही। सुबह निकालकर अपने घर सतघरा आई। इस बीच भिखना ने यह मिथ्या प्रचार करवा दिया कि रात में पंडितानि का धर्म भिखना ने भ्रष्ट कर दिया है। यह बात बड़ी तेजी से प्सारित हो गया।

कुछ दिनों के बाद जब पंडित हरिनाथ मिश्र अपने गाँव वापस आए तो उन्हें इस बात का पता चला। हरिनाथ मिश्रा ने पंडितानि को अपने घर से बाहर निकाल दिया। पंडितानि ने न्याय पाने हेतु राजा हरिसिंह देव के दरबार में गुहार लगाई। राजा ने न्याय हेतु विमर्श करने हेतु समस्त

*विद्वानों को बुलाया और परामर्श किया। अंत में यह निर्णय हुआ कि पंडितानि को अग्नि परीक्षा देना होगा। व्यवस्था हुआ कि सात पीपल के पत्तों पर **"नाह चांडाल गामिनी"** नामक मंत्र लिखकर पंडितानि के हाथ पर रखा जाए और उसपर गरम लोहा रखा जाए। यदि पंडितानि का हाथ जलता है तो वह भ्रष्ट हैं और यदि हाथ नहीं जलता है तो निष्कलंका है। अग्नि परीक्षा की प्रक्रिया पूरी हुई और पंडितानि का हाथ जल गया और दरबार ने उन्हें भ्रष्ट घोषित किया।*

*संभवत: पंडितानी को कलंकिनी घोषित होने पर मिथिला के समस्त स्त्री समाज में एक प्रकार का रोष फैलने के कारण विद्यापति के पितामही लखिमा जी, जो खुद एक विदुषी थी, ने इस निर्णय के खिलाफ आवाज़ उठाने के निश्चय किया तथा लखिमा जी ने मिथिला के राजा के दरबार में दुबारा अग्निपरीक्षा की गुहार लगाई तथा यह भी मांग रखी कि मंत्र **"नाह चांडाल गामिनी"** के स्थान पर नए मंत्र **"नाह स्वपति रिक्त चांडाल गामिनी"** से अग्निपरीक्षा किया जाए। राजा ने इस गुहार को स्वीकार किया तथा दरबार में नए मंत्र के साथ पुन: अग्निपरीक्षा करवाने*

का आदेश दिया। जब अग्निपरीक्षा किया गया तो इस परीक्षा में पंडितानि पवित्र निकली।

विद्वानों के बीच दोनों अग्निपरीक्षाओं पर विमर्श के दौरान पंडित हरिनाथ मिश्र तथा पंडितानि के परिचय (वंशावली/उतेढ़) के बारे में पता लगाया गया तो पाया गया कि दोनों के बीच छठमे स्थान पर स्वजन में विवाह हुआ है इसलिए पंडितानी का अपने ही पति पंडित हरिनाथ मिश्र से संबंध रहने के कारण पंडितानि चांडाल गामिनी हैं। अतः पंडित हरिनाथ मिश्र को समाज से वहिष्कृत कर दिया गया।

तत्कालीन मिथिला के समाज में यह एक अप्रत्याशित घटना थी। समस्त विद्वानों में विमर्श चलने लगा। भविष्य में समाज में कुल दूषित होने, धर्म, समाज व कर्म कांड आदि व्यवस्था को दोषमुक्त करने के लिए किसी नई व्यवस्था को लाने की आवश्यकता महसूस की गई। इस प्रकार के दोष आदि का वर्णन विभिन्न पुरानो में भी मिलता है । विष्णु पुराण, वशिष्ठ पुराण आदि में उल्लिखित है कि - मातृपक्ष में छठी पीढ़ी और पितृपक्ष में सातवीं पीढ़ी में कन्याक के विवाह का अधिकार है।

चांडाल: स्वजना गमोगामों चांडाल: स्वजनासुत: ।

विष्णुपुराण व वशिष्ठ पुराण के अनुसार :

पंचमी मातृपक्षच्च पितृपक्षांच सप्तमी ।

गृहस्थी उद्धहेतकान्यन न्यायेन विधि ना नृपा॥

तत पंचमी सप्तमी मतेती व्याख्येयम ।

पंचमे सप्तमे चैव येष: वैवाहिका क्रिया॥

क्रिया पारा अपिहिते पतिता: शुद्धता गतान।

समाज में इस प्रकार की घटना की पुनरावृति नहीं हो इस उद्देश्य से विवाह के अधिकार प्राप्त करने के लिए नियम वा प्रथा बनाए जाने पर बल दिया गया। मिथिला के विद्वानों ने राजा हरिसिंह देव से एक मत में आग्रह किया कि इसके लिए राजकीय प्रावधान किए जाए। इसी कारण से मिथिला में पञ्जि प्रथा की शुरुआत हुई। मिथिला में पञ्जि प्रबंध की विधिवत शुरुआत से संबन्धित तत्कालीन राजा द्वारा जारी किए गए राजकीय आदेश की प्रतिलिपि प्राप्त करने की गई। महाराज द्वारा जारी किए गए एक राजकीय आदेश इन्टरनेट से प्राप्त हुआ है जो नीचे दिया जा रहा है :

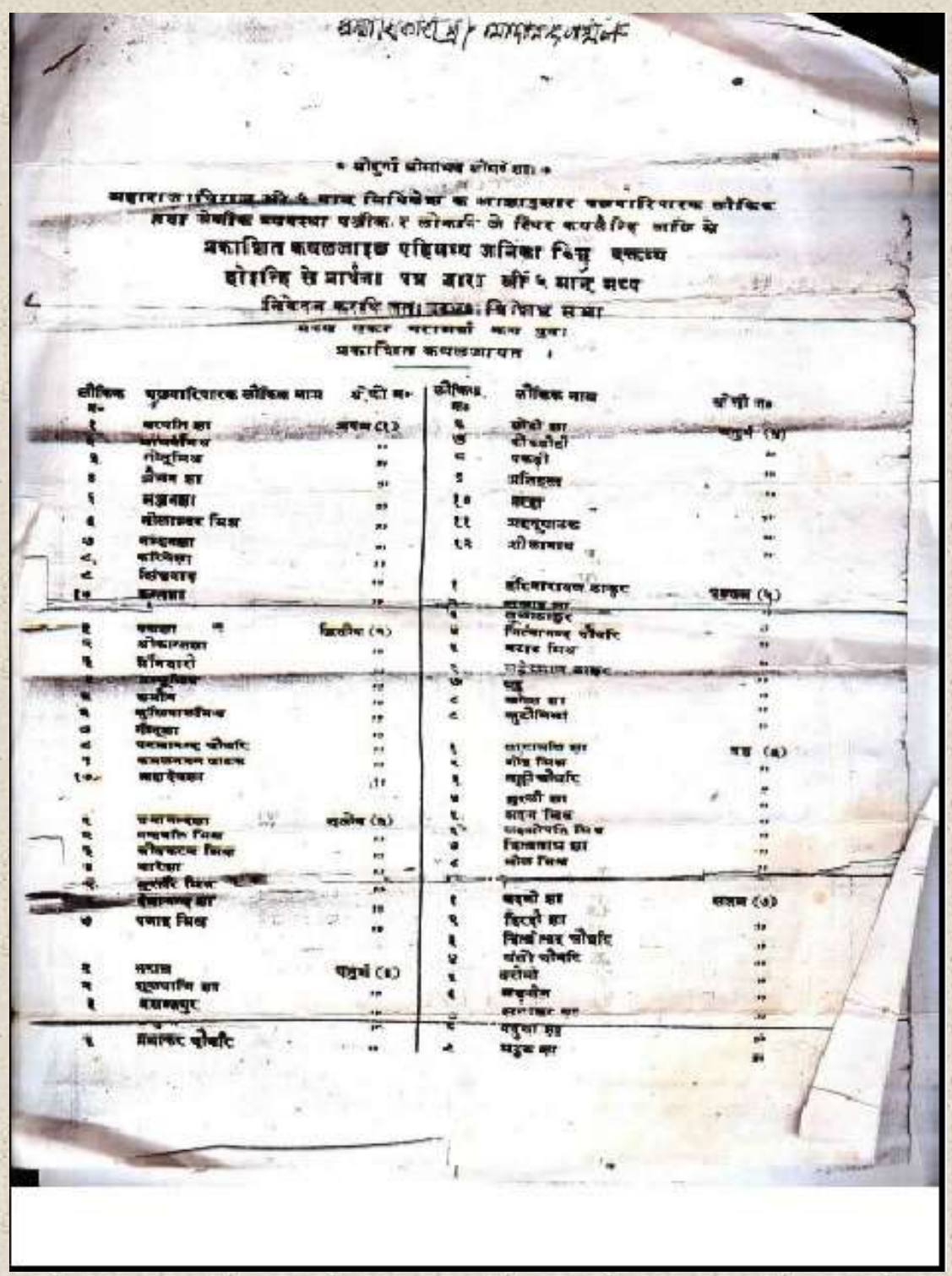

प्रकाशित कथलजाइल एहिसम्म अनिका किसु बक्तव्य
होइनि से मार्थना पत्र द्वारा अहिं ५ मास मध्य

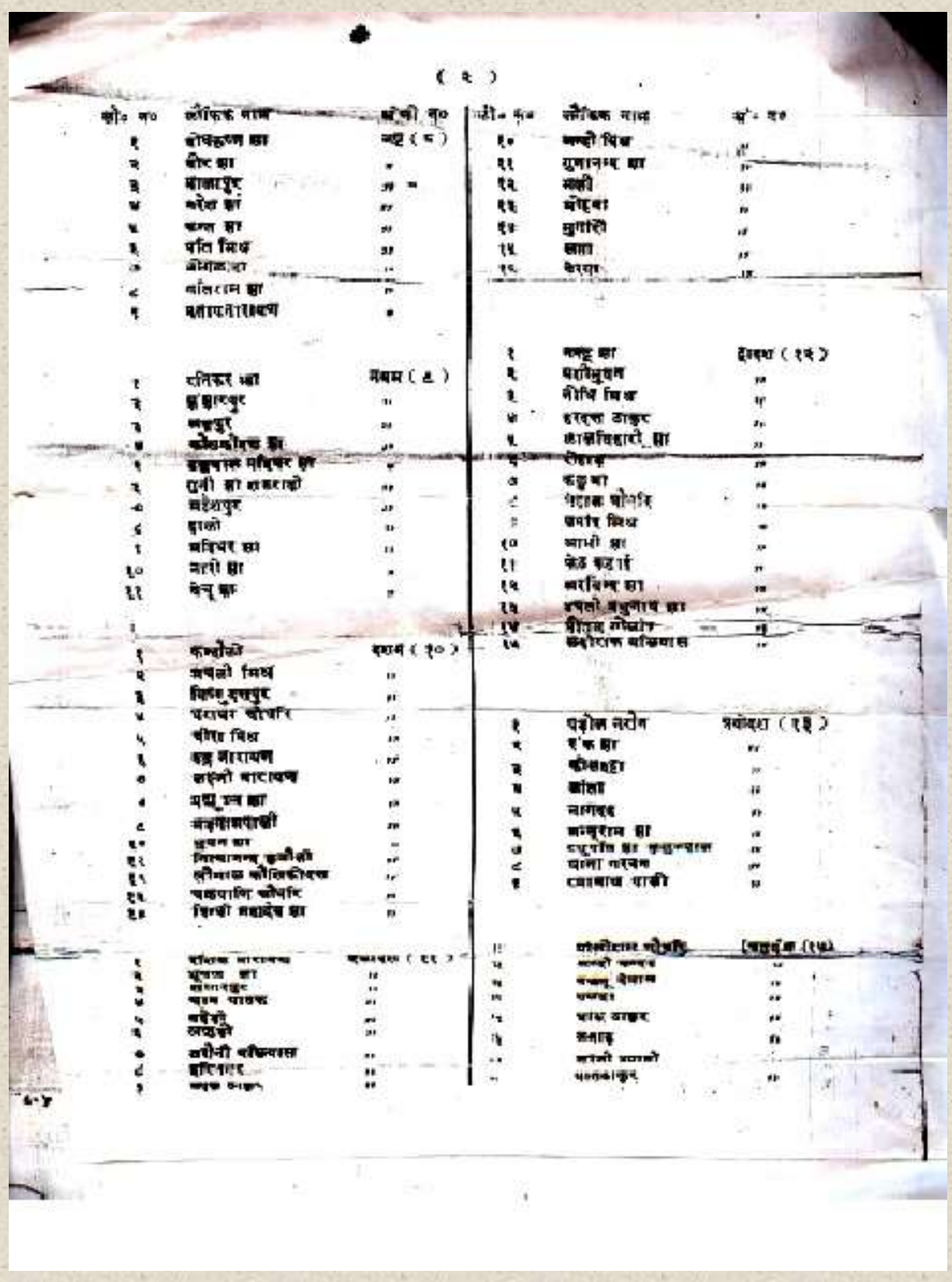

(२)

क्रौ० सं०	लौकिक नाम	[illegible] मू०
१	गोपीकृष्ण झा	[illegible] (८)
२	[illegible] झा	„
३	[illegible]पुर	„
४	[illegible] झा	„
५	[illegible] झा	„
६	पति मिश्र	„
७	[illegible]	„
८	[illegible] झा	„
९	[illegible]	„
१	[illegible] झा	[illegible] (९)
२	[illegible]पुर	„
३	[illegible]पुर	„
४	[illegible] झा	„
५	[illegible] झा	„
६	[illegible] झा [illegible]	„
७	[illegible]पुर	„
८	[illegible]	„
९	[illegible] झा	„
१०	[illegible] झा	„
११	[illegible] झा	„
१	[illegible]	[illegible] (१०)
२	[illegible] मिश्र	„
३	[illegible]पुर	„
४	[illegible] चौधरि	„
५	[illegible] मिश्र	„
६	[illegible] नारायण	„
७	[illegible] नारायण	„
८	[illegible] झा	„
९	[illegible]	„
१०	[illegible] झा	„
११	[illegible]	„
१२	[illegible]	„
१३	[illegible] चौधरि	„
१४	[illegible] महादेव झा	„
१	[illegible]	[illegible] (११)
२	[illegible] झा	„
३	[illegible]	„
४	[illegible]	„
५	[illegible]	„
६	[illegible]	„
७	[illegible]	„
८	[illegible]	„
९	[illegible]	„

क्रौ० सं०	लौकिक नाम	मू० [illegible]
१०	[illegible] मिश्र	„
११	[illegible] झा	„
१२	[illegible]	„
१३	[illegible]	„
१४	[illegible]	„
१५	[illegible]	„
१६	[illegible]	„
१	[illegible] झा	[illegible] (१२)
२	[illegible]	„
३	[illegible] मिश्र	„
४	[illegible] ठाकुर	„
५	[illegible]बिहारी झा	„
६	[illegible]	„
७	[illegible]	„
८	[illegible] चौधरि	„
९	[illegible] मिश्र	„
१०	[illegible] झा	„
११	[illegible]	„
१२	[illegible] झा	„
१३	[illegible] झा	„
१४	[illegible]	„
१५	[illegible]	„
१	[illegible]	[illegible] (१३)
२	[illegible] झा	„
३	[illegible]	„
४	[illegible]	„
५	[illegible]	„
६	[illegible] झा	„
७	[illegible] झा [illegible]	„
८	[illegible]	„
९	[illegible]	„
[illegible]	[illegible] चौधरि	[illegible] (१४)
[illegible]	[illegible]	„
[illegible]	[illegible]	„
[illegible]	[illegible]	„
[illegible]	[illegible] ठाकुर	„
[illegible]	[illegible]	„
[illegible]	[illegible]	„
[illegible]	[illegible]	„

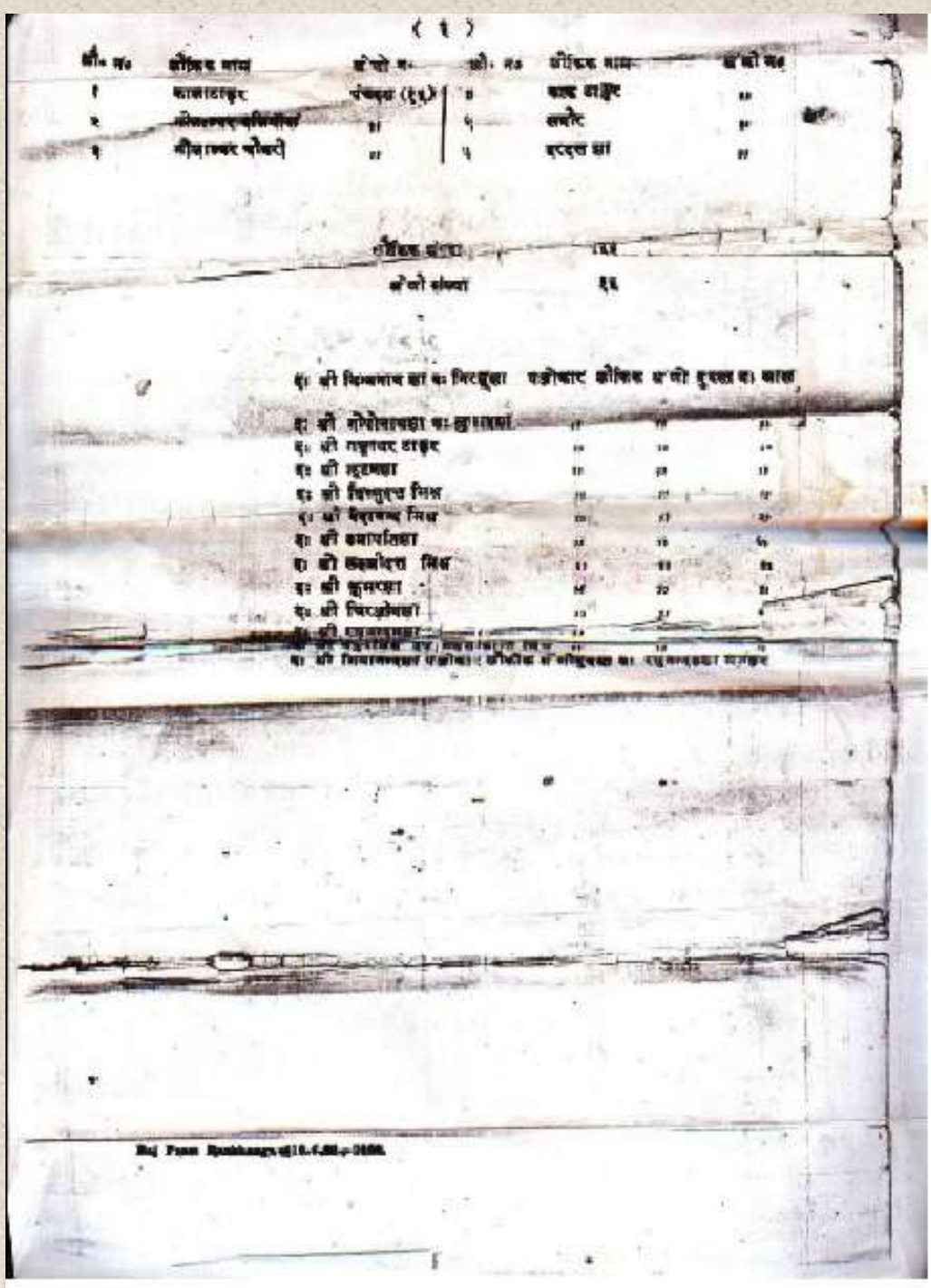

<u>मिथिला में पञ्जि प्रबंध और जातिगत स्थिति</u> –

वर्तमान में मिथिला में पञ्जि प्रथा वैसे तो केवल ब्राह्मण और कायस्थ जाति के प्रथा में लागू है परंतु सभी जातियों में गोत्र की प्रथा है तथा सभी जातियों में विवाह के लिए अलग-अलग मातृ व पितृ पक्ष में कुछ विशेष वा संबन्धित जातियों में निर्धारित पीढ़ियों दूरी रखी जाती है। संभव है कि यह पञ्जि प्रथा ही रहा होगा जो कालांतर में नष्ट हो गया होगा, इसपर खोज की प्रक्रिया जारी है। इस रिपोर्ट में उन जातियों को भी शामिल किया गया है।

मिथिला में लिखित प्रमाण के आधार पर वर्तमान में पञ्जि प्रबंध ब्राह्मण और कायस्थ जाति में उपलब्ध है। जिसे क्रमवार देखने और समझने की कोशिश कराते हैं। कोशोष प्रथा प्रन्ध की शुरुआत लगभग सभी जातियों में शुरू हुई।

<u>मिथिला के ब्राह्मण जाति में पञ्जि प्रबंध :</u>

मिथिला में पञ्जि प्रबंध जैसी व्यवस्था लागू किए जाने की आवश्यकता पंडित हरिनाथ मिश्र व उनकी पत्नी के साथ घटी घटना के कारण हुई संभवत: इसी

कारण से सर्व प्रथा ब्राह्मण जाति के लिए श्रेणी या क्रम का निर्धारण किया गया।

<u>पञ्जि प्रबंध के अंतर्गत ब्राह्मण जाति में श्रेणी :</u>

पञ्जि प्रथा कि प्रायोगिक शुरुआत हेतु सर्वप्रथम राजा हरिसिंह देव जी ने समस्त ब्राह्मणो की सभा बुलाई। कुछ विद्वानों का कहना है कि इस सभा के दिन ब्राह्मणों की उपस्थिती के क्रम और और योग्यता के अनुसार उन्हें श्रेणीबद्ध किया गया, जो इस प्रकार है :

1. जो लोग इस सभा में प्रात: नित्यकर्म रहित उपस्थित हुए उन्हें "निम्न कोटी" में रखा गया।
2. सुबह के पहर मात्र स्नान करके और अल्प पूजा करके दरबार में पहुँचने वालों को "जयबार" कहा गया
3. जो मात्र नित्यकर्म और मध्यान्ह पूजा-पाठ करके, पूर्ण योग्य रहते हुए भी सम्पूर्ण कर्म बिना किए हुए दरबार में उपस्थित हुए उन्हें "जोग" की श्रेणी में रखा गया।

4. त्रिकाल नित्यकर्म श्रुति पाठ करके दरबार में पहुँचने वाले को सर्वश्रेष्ठ श्रेणी "श्रोतीय" कहा गया।

पञ्जि प्रबंध में ब्राह्मणों के इस वर्गिकरण पर प्रो. रामचन्द्र मिश्र मधुकर के अनुसार - तत्कालीन ब्राह्मण समाज को पाँच श्रेणी में रखने के पीछे उनकी कर्म आधारित योग्यता है, जो इस प्रकार है:

1. श्रोत्रीय :– ब्राह्मण समाज में जो लोग वेदाध्ययन में रत रहते थे और श्रुति का अध्ययन अध्यापन करते साथ ही वैदिक कर्म काण्ड को स्वयं व्यवहार में लाते थे तथा दूसरों को प्रेरित करते थे उन्हें श्रोत्रिय की श्रेणी में रखा गया। कहा गया है कि - "श्रुति जानाति श्रोत्रियहः"

2. योग:– यह योग्य शब्द से बना है सर्वथा वेदाचारी नहीं रहते हुए भी दूसरे-दूसरे विभिन्न सासत्रों के पारंगत विद्वान तथा गुरुकुल आदि के सँचालक, जिनके शिष्य दर शिष्य परमपरा की बहुलता और विशिष्टता सिद्ध और साथही जिनका आचरण, रहन–सहन योग्य ब्राह्मण के अनुकूल हो उन्हें योग श्रेणी में रखा गया।

3. पंजीबद्ध:– जिन ब्राह्मणों के नाम व उनके वंशज का नाम चिरकाल से ख्यात वा लिपिबद्ध रहा था उन्हें इस श्रेणी में रखा गया। जिस कुल के विशिष्ट पुरुष सब कौलिक विद्या और प्रतिभाक आगर हो यह इस श्रेणी की विशेषता है। इस कुल के लोग समाज में सत्कार पाते हैं निष्ठा पूर्वक ब्राह्मणत्व कार्य व्यवहार का सम्पादन करते हैं।

4. जयवार.:– यह शब्द ज़ब्बर शब्द से बना है। ऐसा ब्राह्मण वर्ग जो विप्र के मुख्यकर्म - यज्ञ, वेदपाठ, पूजा, अध्ययन, अध्यापन, आदि का सम्पादन नहीं करते हैं व विभिन्न माध्यम से जिबिकोपार्जन करते हैं उन्हें जयबार श्रेणी में रखा गया।

5. निम्नवर्ग :– ऐसा ब्राह्मण वर्ग जो प्रायः ब्राह्मण के नित्य कर्मो से रहित थे उन्हें इस श्रेंणी में रखा गया।

इस प्रकार मिथिला में पञ्जि प्रथा की विधिवत शुरुआत हुई। इस पञ्जि के रखरखाव और इसे समय-समय पर अपडेट रखने व प्रबंधन का दायित्व जिसे दिया गया उसे पंजीकार या परिचेता कहा गया। साथ ही लड़का और लड़की के विवाह से पूर्व इन पंजीकारों से विवाह अधिकार पत्र यानी "सिद्धान्त" को अनिवार्य कर दिया गया। इस हेतु राजा ने मिथिला के भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए चार स्थानों को रेखांकित किया जहां समय-समय पर या साल में एकबार विवाह के उद्देश्य से सभा लगाने का प्रावधान किया जिसमें विवाह योग्य लड़का अपने अभिभावकों के साथ तथा कन्या के अभिभावक इकट्ठा होते और विवाह निश्चित कर पञ्जिकार से सिद्धान्त बनाते थे। शुरुआत में तय किए गए स्थान थे :

1. *दरभंगा क्षेत्र – सौराठ, परतापुर, सझुआर और भाखराइन*
2. *सहरसा क्षेत्र – बनगाम, महिषी और बरुआरी*
3. *पूर्णियाँ क्षेत्र – सुकसेना, फतेहपुर, खमहार और काला बलुआ*
4. *सीतामढ़ी क्षेत्र – ससौला*

उपरोक्त स्थानों में से सौराठ ग्राम में लगनेवाली सभा गाछी में आज भी श्रावण मास में प्रत्येक वर्ष कुछ दिनों के लिए इस सभा गाछी का आयोजन किया जाता है। परंतु पहले जहां लाखों व्यक्ति इस सभा गाछी में उपस्थित होते थे वहीं आजकल कुछेक व्यक्ति ही उपस्थित होते हैं। लोक मान्यता है कि सौराठ सभा गाछी में पहल एक बहुत पुराना एक पीपल का वृक्ष था। जब-जब सौराठ सभा गाछी में सावा लाख ब्राह्मण उपस्थित होते थे तब-तब पुराना पीपल का वृक्ष मुरझा जाता था।

पञ्जिकार :

इस पञ्जि प्रबंध को संभालने की जिम्मेवारी महाराजा द्वारा जिसे दिया गया वह पञ्जिकार कहलाए। पञ्जिकार ही वर-वधु को विवाह का अधिकार प्रदान करते थे। पञ्जिकार दोनों पक्षों के गोत्र, मूल, और वंश को मिलाकर गणना करते हैं – वर और वधु पक्ष के प्रपितामह, अतिवृद्ध प्रपितामह तक कोई संबंध नहीं रहने के पश्चात ही विवाह स्वीकार किया जाता था या जिसे दूसरे शब्दों में अधिकार प्रदान किया जाता रहा है।

पञ्जिकार दिवाकर झा के 11वीं पीढ़ी आज भी पञ्जि प्रबंध कर रहे है। सौराठ गाँव के पंडित विश्वमोहन चन्द्र मिश्र 12 वीं पीढ़ी से पञ्जि प्रबंध संभाल रहे हैं। पंडित दिवाकर झा पेशे से एक बी टेक इंजिनयर हैं फिर भी अपने परंपरा की रक्षा में सदैव तत्पर हैं।

<u>अधिकार निर्णय :</u>

विवाह योग्य लड़का लड़की के लिए विवाह अधिकार पत्र जारी करने का अधिकार पंजीकारों को है जिसे पञ्जि प्रबंध पर निर्धारित मानक के आधार पर दिया जाता है। जिसे स्थानीय भाषा में "सिद्धान्त पत्र " कहा जाता है। कान्या अपने पूर्वज के कुल से छठमे और मातृकुल से पांचवें नहीं होना चाहिए। सभी कान्या के छठी माना गया अहै। आठ पितृ कुल आठ मातृकुल जो पञ्जि में छठवाँ कुल कहलाता है। जिसे इस प्रकार समझा जा सकता है:

1. कान्या के	पिता के	पितामह के	पितामह
2. कान्या के	पिता के	पितामह के	मातामह
3. कान्या के	पिता के	पितामही के	पितामह

4. कान्या के	पिता के	पितामही के	मातामह
5. कान्या के	पिता के	मातामह के	पितामह
6. कान्या के	पिता के	मातामह के	मातामह
7. कान्या के	पिता के	मातामही के	पितामह
8. कान्या के	पिता के	मातामही के	मातामह
9. कान्या के	माँ के	पितामह के	पितामह
10. कान्या के	माँ के	पितामह के	मातामह
11. कान्या के	माँ के	पितामही के	पितामह
12. कान्या के	माँ के	पितामही के	मातामह
13. कान्या के	माँ के	पितामह के	पितामह
14. कान्या के	माँ के	मातामह के	मातामह
15. कान्या के	माँ के	मातामह के	पितामह
16. कान्या के	माँ के	पितामही के	मातामह

ऊपर दिए गए सोलहों व्यक्ति के संतान वर अपने मातृकुल के किसी पूर्वज से हो और कान्या छठम हो तो वर से कान्या का विवाह किया जा सकता है और

यदि पंचम आ जाने से या उससे कम होने पर विवाह का अधिकार नहीं मिल सकता है। सोलहो व्यक्ति के संतान घर अपने पिता के कुल से हो और कान्या छठम रहता है तो अधिकार नहीं हो सकता है।

कान्या और वर के मातृ सपिंड के अंतर्गत नहीं होना चाहिए। मतलब जिस मूलग्राम के वर हों उस मूलग्राम से यदि कान्या का विवाह हो तो सपिंड कहलाता है। इसे धर्म शास्त्र में भी दर्शाया गया है :

मातृ सपिण्डा सप्त पुरुषो बधियः ।

उपरोक्त मत से सहमति जताते हुए भारत सरकार ने हिन्दू विवाह अधिनियम में भी इस प्रावधान को मान्यता देकर इसे कानूनी संरक्षण भी दिया है। हिन्दू विवाह अधिनियम 1955, धारा 5, (iv) व (v) के नीचे देखा जा सकता है, जो इस प्रकार है:

हिन्दू विवाह अधिनियम 1955, धारा 5 -

(iv) जब कि उन दोनों में से प्रत्येक को शासित करने वाली रूढ़ि या प्रथा से उन दोनों के बीच विवाह अनुज्ञात न हो, तब पक्षकार प्रतिषिद्ध नातेदारी की डिग्रियों के भीतर नहीं हैं;

(v) जब तक कि उनमें से प्रत्येक को शासित करने वाली रूढ़ि या प्रथा से उन दोनों के बीच विवाह अनुज्ञात न हो तब पक्षकार एक-दूसरे के सपिण्ड नहीं हैं।

कान्या –वर के विवाह के अधिकार के लिए इस प्रकार के और भी कई तकनीकी कसौटी है परंतु मोटे तौर पर कान्या और वर के अधिकार के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान में रखना आवश्यक है :

1. कान्या और वर समगोत्री नहीं होना चाहिए
2. वत्स और सावर्ण गोत्र में संबंध नहीं होना चाहिए क्योंके वत्स और सावर्ण को सहोदर माना गया है।
3. कान्या-वर के पिता के वंश के कोई पूर्वज छठम नहीं होना चाहिए।
4. कान्या-वर के मातृकुल के पूर्वज कभी भी पांचवें तक नाही होना चाहिए।

5. कान्या-वर माँ का सपिंड नहीं होना चाहिए।

6. वर के 'कठमामा' के कान्या से विवाह नहीं होना चाहिए।

<u>गोत्र और मूल : -</u>

इस प्रकार मिथिला में बीस प्रकार का गोत्र और डेढ़ सौ से भी अधिक मूल और मूलग्राम में बंटा हुआ था। समाज में पञ्जि व्यवस्था के अंतर्गत विभाजन यहीं पर ही नहीं रुका। आगे चलकर कर्मकांड के आधार पर भी इनका बिभाजन हुआ। सामवेदी और शुक्ल यजुर्वेदी ब्राह्मण बाजसनेय (बाचसने) और छंदोग्य (छंदोक) के रूप में विभक्त रहे। परंतु अभी मुख्य रूप से मिथिला में 36 प्रकार का मूल ग्राम है। ये मूलग्राम भी सामाजिक स्तर के दृष्टिकोण से तीन भागों में विभक्त है। सर्वोच्च, उच्च और मध्यम। संभवत: यह वर्गिकरण सामाजिक श्रेष्ठता के आधार पर रहा होगा जो आज भी समाज में देखने को मिलता है।

पञ्जि प्रथा के अनुसार मैथिल ब्राहम के 20 प्रकार के गोत्र हैं जो इस प्रकार हैं:

1. शंडिल्य
2. वत्स

3. सावर्ण

4. पाराशर

5. भारद्वाज

6. काश्यप

7. गर्ग

8. कौशिक

9. कात्यायन

10.अलाम्बुकक्ष

11.गौतम

12.कृष्णात्रेय

13.गौतम

14.मौदगल्य

15.उपमन्यु

16.कौंडिल्य

17.वशिष्ठ

18.कपिल

19.विष्णुवृद्धि

20.तांडी

उपरोक्त 20 गोत्र और लगभग 169 मूल है तथा 375 के लगभग मूलग्राम है। उपरोक्त में से उदाहरण स्वरूप दो गोत्रों – काश्यप और शांडिल्य के लिए संकलित मूलग्राम नीचे दिया जा रहा है। जो इस प्रकार है :

काश्यप गोत्र मूल सूची –

क्रम	मूल	मूलग्राम
1	दरिहरे	राजनपुर
		भरगाम
		मधुकर पत्तों
		भरोरा
		पचाढ़ी

		अमरावती
		गेह
		नोतवार
		वनौली
		सकड़ी
		ब्रह्मपुर
		मतोना
		सिंहवार
		सहसराम
		विजौली
		पहलौल
2	खौआल	नाहस
		काहिल
		सुखैत
		वानपुर

		महुआ
		महनौड़ा
		मुराजपुर
		बिजौली
		सिंगरवार
		पतौना
		कुकडीह
		खड़ी
		करमा
		बिठानपुरा
		दरिमा
3	मारर	सिहौल
		कदमा
		दहौरा
		बेलौजा

		पिलखी
		कोइलख
		मंगरौनी
		बधात
		डीह
		जगौर
		कटौना
		दहिया
		ओकी
		वारी
		ब्रहमपुर
		कटका
		शिवखरिया
		कटैया
		राजौरा

		सकड़ी
		कनसम
		जगतपुर
		मिसरौली
4	बलिआसे	नरसाम
		मारर
		ततेल
		बलहा
		धमौरा
		जमसम
		खड़ी
		सकड़ी
		खरका
		आसी
		बूढ़ेब

		बिंदौली
		बसुआरी
		महुआही
		निपनिया
5	सतलखा	सतलखा
		कन्हौली
		डोकहर
		कच्छुरा
6	कुसुमवाल	सवास
		धनौजी
		खनाम
		दरिहरे
		कुसमौल
		नवहथ
		बढ़ियाम

7	सकडाढ़ी	थरहट
		सकड़ी
		हड़ड़ी
		सतेढ़
		ब्रह्मपुर
		सपता
		कवई
		छाउन
		राहर
		भुखरौली
		ततेल
		बेल
		पराउ
		बेसरा
		सुरादय

		सूखेत
		लोहना
		राजनपुर
8	ओइनीवार	ओइनी
		पाता
		जगतपुर
		खांगुर
		जजुआर
		जपुरा
9	विसेवार	विस्फ़ी
		नानपुर
10	भरवाल	रामपुर
11	भरीये	बलराजपुर
12	कटैवार	मलंगिया
		अन्हरा

13	पकड़ीये	महिषी
		नवहथ
		सकड़ी
		भिट्ठी
		ब्रहमपुर
14	मेहरेदीवार	सोहास
15	लगुरदहे	दहौरा
16	विंधवाल	सोहास
17	पहस	महिन्द्रो

<u>शांडिल्य गोत्र</u> की मूल व मूलग्राम सूची :

क्रम	मूल	मूलग्राम
1	सोदरपुर	सरिसव

		जगौर
		मानीक
		दिगौन
		कटका
		गौड़
		सिंगरवार
		रोहिया
		महिया
		छाजन
		सुंदर
		वेहरा
		हसौली
		हाटी
		सुखेत
		राहर

		रैयाम
		वाली
		कतामा
		भखरौली
		कन्हौली
		खोरि
2	गंगौली	सकड़ी
		दुमारा
		देशुआल
		धनोजी
		नगवास
		सुटकेन
		अपयेनी
		अहियारी
		पचही

3	पवौली	बढ़ीआम
		रघेपुरा
		जगत
		वछौनी
		धेनु
		राजे
4	दहिभत	नरौछ
		देहटि
		वेहट
		दहिभत
5	खंडवाला	गढ़
		भौड़
		हड़ड़ी
		खुट्टी
		एकमा

		देशुआल
		गुलदी
		देऊंडी
6	जजुआरे	उदनपुर
		जमुनी
		पचही
		दिगौन
		ब्रह्मपुर
		भरगाम
7	कोदरिये	पचाढ़ी
8	सरिसबे	खांगुड़
		कन्हौली
		सकड़ी
		छाजन
		बधवास

		जोङ्कि
		सरिसव
9	करमहे	अहपुर
		वधात
		शिवराम
		वाक
10	परिसरे	सहुरि
		मलंगिया
		खांगुड़
		महिली
11	गंगौरे	पौउनद
		अहियारी
12	सिंहासम	सिंहासम
		खोरि
13	अनरिये	लगुनिया

		नेहरा
		पिड़ापुर
14	नानौतीवार महुआ	महुआ
15	तलहनपुर सुधानी	कटहारा
16	महुए महाव	महाव
17	करियने करियन	करियन
18	होहिआरे विकरमपुर	विकरमपुर
19	तिलैवार	तिलैवार ब्रह्मपुर
		रतनपुर
		धरमपुर
20	माहवोर माउ वेहट	माउ वेहट
21	लगुरदहे दहौरा	
22	सकड़ीवार छाउन	

23	भटोरे रतनपुर	
24	जजुगामे लोहना	लोहना
		अन्दौली
		सकड़ी
25	छतिवने छतिवन	छतिवन
26	तपनपुर खुनाम	सुलहनी
27	पसुरवार तरलाही	तरलाही
28	घुसिनामे मझियाम	सकड़ी
29	उत्तमपुर ककडौल	ककडौल
30	ब्रह्मपुरिये	ब्रह्मपुर
31	दिघवे	

<u>गोत्र व मूल के अनुसार वर्गिकरण :</u>

गोत्र और मूल के अनुसार ब्रह्मणों का वर्गिकरण किया गया है। पञ्जि प्रबंध के शुरुआत में राजा हरसिंह देव ने पाँच श्रेणी में बांटा गया था। इनमें श्रोतीय को सबसे उच्च श्रेणी में रखा गया था। शुरुआत में 13 व्यक्ति को श्रोतीय श्रेणी में रखा गया था, ये 13 लोग वेद के किसी ना किसी एक शाखा का पूर्ण अध्ययन किया था। जिन्हें अवदात की संज्ञा दी गई थी। इन्हीं के वंशज श्रोतीय कहलाए इसे स्थानीय रूप से 'तेरह धरिया' भी कहा जाता है। श्री महेंद्र नारायण राम के अनुसार - पञ्जि में वैसे तो इन तेरह परिवारों का स्पष्ट वर्णन नहीं है परंतु बीस उत्तम कुल में श्रोतीय और तेरह मध्यम मूल में योग्य वर्ग हैं। जो इस प्रकार है:

उत्तम मूल –

गोत्र - शांडिल्य

वत्स

काश्यप

परासर

कात्यायन

मूल –

1. गंगौली
2. पबौली
3. खंडवाल
4. सदरपुर
5. सरिसव
6. घोसौट
7. तिसौत
8. करमहे
9. बुधवाल
10. बहेराढ़ी
11. अलामी
12. पाली
13. वनियाम
14. हरिअम्बे
15. दरिहरे

16. मंदर

17. शंकराढ़ी

18. खउआल

19. नरौन

20. कुजौली

मध्यम मूल –

गोत्र -

1. शांडिल्य

2. कश्यप

3. परासर

4. भारद्वाज

5. सावर्ण

6. वत्स

मध्यम मूल –

1. जजिवाल

2. दिघो

3. पंडुआ

4. सतलखा

5. बलिआसे

6. विस्फ़ी

7. सुरगण

8. बेलौचा

9. एखारा

10. पनिचोभ

11. तेकवाल

12. उजाति

13. जालाकी

सर्वोच्च मूलग्राम –

1. हरियम्बे

2. खौआड़े

3. सरिसबे

4. बुधबारे

5. मड़रय

6. दरिहरे

7. सदरपुरिए

8. घुसौतेय

9. तिसाइते

10.करमहे

11.खड़ोदय

12.नरोनय

13.बभनियामय

मिथिला में वर्तमान में लिखित पञ्जि प्रबंध ब्राह्मण और कायस्थ में ही प्रचलित है परंतु लगभग सभी जातियों में भी श्रेणी का वर्गीकरण किया गया है। ब्राहमण के अलावे कायस्थ में पञ्जि प्रथा या उतेढ़ पोथी उपलब्ध है।

पंडित भवनाथ झा के अनुसार - पञ्जि मूल रूप से व्यक्तित्व का एक दस्तावेज है। दुर्भाग्य से, अब यह महत्वपूर्ण रिकॉर्ड दयनीय स्थिति में है। बड़ी संख्या में ताड़ के पत्ते और कागज की पांडुलिपियां बाढ़ में बह गईं और विनाशकारी

आग में कई और नष्ट हो गए और कुछ पृथ्वी-झीलों में समा गए। अब कुछ पांडुलिपियाँ गाँवों में गाँवों में बिखरी पड़ी हैं और बहुत से कुछ पुराने वृद्ध पंजिकारों के कब्जे में हैं, जिन्होंने उन्हें केवल अपने व्यवसाय के लिए बंद कर दिया है। यह दुखद स्थिति है कि मिथिला के इतिहास का एक अग्रणी रिकॉर्ड तथा मिथिला की यह अमूर्त संस्कृति समाप्ती के मार्ग पर है।

<u>कायस्थ जाति में पञ्जि प्रबंध :</u>

कर्ण कायस्थ जाति में पञ्जि प्रबंध की शुरुआत करते हुए -

स्वस्ति श्री हरिसिंहदेवे रघुनाथ भूपाल: चूड़ामणि: ।

शाके युम्मगुणाक सस्मित वर कर्णस्य पंजीकृत: ॥

तस्मात कर्ण सुवर्ण बीजकलिते कायस्थ राजन्य: ।

के वस्त्रार्थेषु यशस्विने सुगीणने श्रीश करा याददाता ॥

राजा हरिसिंह देव ने 1216 शाके में नेहरा गाँव में एक पोखरि (तालाब) खुनवाया था। इसी पोखरि के यज्ञ के समय कायस्थ जाति के लिए पञ्जि प्रथा की की घोषणा की थी। उसी के बाद मिथिला आके कायस्थ के लिए अलग से

पञ्जि प्रबंध की शुरुआत हुई। इस पञ्जि के अनुसार आदोकर्ण कुलोद्भवस्य कचितों वंशो बलाइन महान वंश के श्रीधर दास प्रवर्तक माने जाते हैं।

मिथिला में चौदह मूल के कायस्थ का उल्लेख मिलता है :

1. वलाइन
2. वरैल
3. कोठीपाल
4. नरङ्ग्वली
5. महुनी
6. माणडीय
7. शीशव
8. पकली
9. वतिकवाल
10. केउटी
11. जोए
12. वसंतपुर

13. नउला

14. ओआरी

यह अनुमान लगाया जाता रहा है कि इन चौदहों मूल (वंश) के लोग विभिन्न गाँव में रहते हैं ये लोग जिस किसी भी गाँव रहे वो उनके निजवास गाँव के नाम से जाना अजाता है और पहले के गाँव का नाम डेरा से प्रसिद्ध रहा है। इनको मिलनेवाली उपाधि इस प्रकार है :

वलाइन	-	दास
वीयर	-	दास, चौधरी
शीशव	-	मल्लिक, पञ्जिकार
कोठीपाल	-	दास, चौधरी
नरंगवाली	-	दास, चौधरी
पकली	-	लाभ
वतिकवाल	-	कंठ
महुनी	-	दास, पञ्जिकार
मांडीछ	-	दास

वसंतपुर - दत्त

अठहर - दास

गढ़कब - दास

ओए - दास

गढ़निधि - दास

यह उपाधि तो पञ्जि प्रबंध के अनुसार है परंतु वर्तमान में उपाधि के अनुसार कुल मूल का पता लगाना कठिन हो गया है। कालांतर में व्यक्ति अपने इक्षानुसार उपाधि रखते हैं। उपरोक्त चौदहों की क्रमबद्धता पञ्जि प्रबंध के अनुसार इस प्रकार है :

1	वलाइन	वलाइन सप्ता
		वलाइन मधेपुर
2	वीयर	वीयर केउटी
		वीयर दाड़िमा

		वीयर रनवे
		वीयर आहील
		वीयर वरहेता
		वीयर तारालाही
		वीयर कहुआ
		वीयर बहादुरपुर
		वीयर खराजपुर
		वीयर पधारी
		वीयर मुरतुजापुर
		वीयर डखराम
		वीयर बहेड़ा
		वीयर धेरुख
		वीयर हावीभौआर
3	शीशव	शीशव महिसारि
		शीशव लोहना

4	कोठीपाल	कोठीपाल राघोपुर
		कोठीपाल हिरणी
5	नरंगवाली	नरंगवाली सुपौल
		नरंगवाली आसी
6	पकली	पकली कुशणपूरा
7	वतिकवाल	वतिकवाल सनकार्थ
8	महुनी	महुनी लडुआरी
9	मांडीछ	मांडीछ सुपौल
10	वसंतपुर	वसंतपुर जोकी
11	अठहर	अठहर सुंदरपुर
12	गढ़कब	गढ़कब सिमरा
13	ओए	ओए लाउफ
14	गढ़निधि	गढ़निधि खानाम

इसके अलावे इन मूलों के लोग के मद में अन्य डेरा का उल्लेख भी पञ्जि में मिलता है जो इस प्रकार है :

1	वलाइन	वलाइन दोस्तपुर
		वलाइन भोजपुर
		वलाइन महिसाम
		वलाइन दीप
		वलाइन गणेशपुर
		वलाइन कबै
		वलाइन चौरी
		वलाइन दुलारपुर
		वलाइन नहुअवार
		वलाइन झंझारपुर
		वलाइन सिरामपुर
		वलाइन पुनहद
2	वीयर	वीयर मढौली
		वीयर विश्वनाथपट्टी
		वीयर ककरी

		वीयर रतनपुरा
		वीयर भच्छी
		वीयर बैगनी
		वीयर गलमा
		वीयर चिकसारि
		वीयर सकुरी
		वीयर देसुआ
3	शीशव	शीशव समसा
		शीशव हर्षवार
		शीशव वहभौस
4	कोठीपाल	कोठीपाल चंडैल
		कोठीपाल तरिसम
		कोठीपाल शिवनगर
		कोठीपाल अवेरी
		कोठीपाल माहिल

		कोठीपाल परिहार
		कोठीपाल बनवारी
5	नरंगवाली	नरंगवाली जड़सैन
		नरंगवाली भदवारी
		नरंगवाली गोठिला
		नरंगवाली चिचरी
		नरंगवाली अंटोला
		नरंगवाली वेला
6	पकली	पकली धुरलख
		पकली नवनगर
		पकली चपता
		पकली समौल
7	वतिकवाल	वतिकवाल धसना
8	महुनी	महुनी मानीपुर
		महुनी करहरा

		महुनी सलहा
9	मांडीछ	मांडीछ कोदवा
		मांडीछ मिहिर
		मांडीछ जगतपुर
10	वसंतपुर	वसंतपुर मोटोना
		वसंतपुर सिंघया
		वसंतपुर परसपुर
		वसंतपुर गोबरौरा
		वसंतपुर महतरी
		वसंतपुर सरलहिया
11	अठहर	अठहर
12	गढ़कब	गढ़कब दरभंगा
		गढ़कब बोचहा
		गढ़कब लवानी
		गढ़कब चकदह

		गढ़कब रांटी
		गढ़कब मदनपुर
13	ओए	ओए मंदार
		ओए महापाल
14	गढ़निधि	गढ़निधि मंगरौनी

इसके अलावे कंचनपुर (नेपाल) में स्थित एक अभिलेख के आधार पर कर्ण कायस्थ के 360 मूल की चर्चा है तथा श्री वैद्यनाथ लाल दास लिखित मैथिल कर्ण कायस्थ के गोत्र व प्रवर में 81 गोत्र मूल की चर्चा की गई है।

मिथिला के ब्राह्मण और कायस्थ जाति में तो पञ्जि प्रबंध वर्तमान काल तक प्रचालन में है। परंतु अन्य जातियों – दुसाध, मल्लाह, गुआर (यादव/अहीर), डोम, नट आदि में भी जाति के अंदर ही श्रेणीबद्ध किया गया है। इन जातियों में गोत्र का प्रावधान है। इन जातियों के गोत्र व श्रेणी आदि इस प्रकार है :

<u>दुसाध जाति –</u>

दुसाध एक दलित जाति है। इस जाति में के आंतरिक वर्गिकरण में अलग-अलग मत मिलते हैं। विभिन्न विद्वानों के मतों में से तीन प्रमुख मत इस प्रकार है :

स्व0 महावीर पासवान के अनुसार – इनके अनुसार मिथिला में दुसाध जाति पाँच गोत्र/वर्ग के हैं :

1. कामहर
2. मघैया
3. पलिवार
4. कुरमी
5. कोठीवाड़

श्री बृजलाल राम के अनुसार दुसाध जाति को सात श्रेणी है –

1. सूर्यहा या सूरजाहा
2. मगधिया या मगहिया
3. कन्नौजीया

4. कुरणा

5. सिलहौरिया या सिलटा

6. पहलीवार या पलिवार

7. ठाढ़ी (राढ़ी)

श्री नरेंद्र कुमार झा के अनुसार इसे साथ श्रेणी/गोत्र –

1. मगहिया

2. कामर

3. पलिवार

4. बाबूर्ची

5. वहेलिया

6. मदेशिया

7. धारही

8. कोठीवाल

9. नूनियाँ

दुसाध जाति में लिखित पञ्जि व्यवस्था तो देखने को नहीं मिलता है परंतु इस जाति में भी वर-कान्या के विवाह पूर्व पीढ़ी का ख्याल रखा जाता रहा है जिसे स्थानीय भाषा में 'डीह परिछाएब' कहा जाता है।

<u>मल्लाह जाति –</u>

मिथिला में मल्लाह जाति में भी तो किसी प्रकार का कोई लिखित पञ्जि उपलब्ध नाही है परंतु इस जाति में भी कई उपजातियाँ है तथा वर-कान्या के वैवाहिक संबंध के लिए अपने सामाजिक नियमों का पालन करते हैं। मल्लाह जाति में गोत्र के अनुसार उपजातियाँ इस प्रकार है :

1. बिन्द
2. केवट
3. चाँय
4. बेलदार
5. मल्लाह
6. नोनिया
7. खर्चवह

8. जदिया

9. खरबिन्द

10. सोरहिया

11. तीयार

12. मुड़ियारी

13. कश्यप

14. खुलवट

15. धीवर

16. तोमर

17. खरबा

18. रामकवार

19. गौड़

20. कैवर्त

21. चौहान

22. गोढ़ी

23. वनपर

24. चोरहा

25. किरहा

26. कोल

27. पर्वतिया

28. लहेरिया

29. महिषी

30. कुलीन

31. सौंध

32. वाशम

33. लोध

<u>डोम जाति –</u>

मिथिला के डोम जाति का भी कोई लिखित पञ्जि तो नहीं है तथा इस जाति में गोत्र शब्द के स्थान पर खुरहा शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। इस जाति में विवाह के लिए इसी खुरहा या वंश का ख्याल रखा जाता है। इस जाति में मातृ

पक्ष और पितृ पक्ष में तीन से लेकर पाँच पुश्त का अंतर रखा जाता है।

मिथिला के डोम की प्रमुख खुरहा या वंश इस प्रकार है :

1. अधलपुरिया
2. अलमौर
3. अर्रा
4. औंहिस
5. आधारपुर
6. अमारी
7. सुरेता
8. कोनलियार
9. कसमा
10. कोठिया
11. कल्याणपुर
12. बन्हौली
13. कानू
14. कोठियाइता

15. खोंहीलियार

16. गोरैता

17. घटैता

18. घटहो

19. चोन्हलियार

20. चचबार

21. चनौली

22. जठूअति

23. जरुआ बेलसंडी

24. जरुआ बेसारा

25. जलालपुर

26. जरुऐत

27. टमकैत

28. तिसवार

29. नागरबस्ती

30. पोनरिया

31. पॉण्ड

32. पाँचमोहाल

33. पूसा

34. पूनहास

35. फूल

36. सोमपरिया

37. बेल सरैत

38. बहैल बरिया

39. मरैवार

40. मगहिया

41. मनकेता

42. महुअति

43. मलकी

44. मधुपुरिया

45. रोसरैत

46. ललवार

47. सरहनि

48. लाधा बरबट्टा

49. लाधा

50. लाला गच्छ

51. बेसारा

52. सोनपरिया

53. सिंघरा

54. सोनपुर

55. हाँसैता

56. हायर

57. हांसा

डोम जाति में तिरहुतिया यानी मिथिला के डोम पछिमाहा यानी पश्चिम के डोम से संबंध नहीं करते हैं। इस जाति में विवाह के लिए इसी खुरहा या वंश का ख्याल रखा जाता है। इस जाति में मातृ पक्ष और पितृ पक्ष में तीन से लेकर पाँच पुश्त का अंतर रखा जाता है।

<u>यादव (अहीर) जाति में</u> –

मिथिला में अहीर जाति को गुआर भी कहा जाता है। यह जाति मूल रूप से पाँच उपजाति में बांटा हुआ है जो इस प्रकार है :

1. किसनौथ
2. मजरौथ
3. कनौजिया
4. घोसीन
5. गौर

इस जाति के नाम के आगे – यादव, सिंह, सल्हैता, भदसेवार, गुडमैता, टैरैटा, मंडल, बनरैत, घोष, भिंडवार, मड़र, बनैता, माँझी, भोरेर, सिहपलिया, घुसकुलिया, गोरहान, ढाढ़िया, रान, बरबरिया, धनखोटी, कापड़ि, छोरवार, नतहाना, गोप, सिहमोइत, गोइत, गोहिवार, वनेवार, रुदलवार, अलगरिया, चौड़वार, राय, सुनरैत, नरसरिया, खम्हार, छिट्टन, आदि।

<u>मिथिला में पञ्जि प्रबंध और सौराठ गाँव :</u>

मिथिला के तत्कालीन राजा हरिसिंह देव ने मिथिला के भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए चार स्थानों पर विवाह के उद्देश्य से सभा लगाने का प्रावधान किया जिसमें विवाह योग्य लड़का अपने अभिभावकों के साथ तथा कन्या के अभिभावक इकट्ठा होते और विवाह निश्चित कर पञ्जिकार से सिद्धान्त बनाते थे। शुरुआत में तय किए गए स्थान थे :

दरभंगा क्षेत्र – सौराठ, परतापुर, सझुआर और भाखराइन

सहरसा क्षेत्र – बनगाम, महिषी और बरुआरी

पूर्णियाँ क्षेत्र – सुकसेना, फतेहपुर, खमहार और काला बलुआ

सीतामढ़ी क्षेत्र – ससौला

उपरोक्त सभी स्थानों पर सभा लगभग बंद ही हो चुकी है परंतु सौराठ में आज भी सभा लगती है। पहले सौराठ सभा से सालाना औसतन 10-12 हज़ार शादियाँ होती थी वही वर्तमान में एक प्रकार से यहाँ सांकेतिक सभा ही लगती है। सौराठ ग्राम मधुबनी ज़िला में स्थित है। पञ्जि प्रबंध और सौराठ सभा पर कई विद्वानों ने अध्ययन किया है। डा0 कैलाश कुमार मिश्रा के

अनुसार - सौराठ: मिथिला का एक विरासत गांव है। मिथिला के प्राचीन राजा, जनक से जुड़े राष्ट्र, जिनका नाम रामायण महाकाव्य में मिलता है। परंपरा यह है कि जनक की पुत्री सीता का स्यंवर इसी गांव में हुआ था। इस गांव के में भगवान सोमनाथ का मंदिर स्थित है। मिथिला में ग्राम सौराठ (सौराष्ट्र) के सोमनाथ और गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के सोमनाथ के बीच एक दिलचस्प समानता है। गाँव के लोगों में मिथक और इतिहास को मिलाने की असाधारण क्षमता है। जैसा कि ऐतिहासिक स्रोत बताते हैं, 1025 ईस्वी में, मोहम्मद गजनी ने सौराष्ट्र क्षेत्र में पश्चिमी तट पर स्थित सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर पर हमला किया था। उसने मंदिर के शानदार धन को लूट लिया और उसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया। स्थानीय लोगों के अनुसार, भगवान सोमनाथ दो मैथिल ब्राह्मण भाइयों, भागीरथदत्त शर्मा और गंगादत्त शर्मा के सपने में दिखाई दिए, और उन्हें अपना ही शिवलिंग ले जाने के लिए कहा। भगवान के निर्देश का पालन करते हुए, दोनों भाई सौराष्ट्र गए, सौराठ में शिवलिंग लाए और उन्हें लंबे समय तक छिपाए रखा। बाद में लिंग को विधिवत रूप से प्रतिस्थापित कर दिया गया।

18 वीं शताब्दी में राजा ने यहां मधेश्वरनाथ का मंदिर बनवाया था। इस गाँव की एक और खासियत है। लगभग हर साल, विवाह के निपटारे के लिए शुभ दिनों के दौरान, हजारों मैथिल ब्राह्मण यहां इकट्ठा होते हैं। इस तरह की आवधिक बैठकों को सभा (विवाह हेतु लोगों का इकट्ठा होना) कहा जाता है। विवाह के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक वंशावली विशेषज्ञ से असजनपत्र (गैर-संबंध) नामक एक प्रमाण पत्र प्राप्त करना अनिवार्य है, जिसमें कहा गया है कि दोनों पक्षों के बीच "रक्त संबंध" नहीं है। पंजिकर की संस्था, वंशावली, का नेतृत्व पहली बार कर्नाट वंश के महाराजा हरसिंहदेव (1296-1323 ई।) ने किया था। समय के दौरान वंशावली अभिलेखों को उतेढ़पोथी कहा गया। और विवाह की सुविधा के लिए मिथिला में कुछ निश्चित स्थानों पर लोगों को योग्य वंशावली उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक महसूस किया गया। इससे पहले, 14 गांवों में इस तरह के विवाह समारोह आयोजित किए जाते थे। उत्तर बिहार में सौराठ, खामगड़ी, भागपुर, शेहर, गोविंदपुर, फत्तेपुर, सजहुल, सुखसैना, अकररही, हेमनगर, बलुआ, बरौली, समौल और साहुला। इन गांवों के बारे में प्रख्यात संस्कृत पंडित रहते थे जो वंशावली से संबंधित मामलों के अधिकारी थे। यह स्वाभाविक था, इसलिए, सौराठ को वंशावलीवादियों को

इकट्ठा करने और परामर्श करने के लिए मैथिल ब्राहमणों के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान के रूप में चुना गया था। जबकि सौराठ परंपरा को बनाए रखता है, अन्य सभी गांवों में इस प्रकार की परंपरा बंद हो चुकी है।

वर्तमान सौराठ सभा

मधुबनी के जिला समाहर्ता श्री शीर्षत कपिल अ[illegible] पञ्जि के बारे में विमर्श कराते हुए पञ्जिकार श्री विश्वमोहन चन्द्र [illegible]

उपरोक्त में से कुछ फोटो विभिन्न स्रोतों-व्यक्तिगत, संस्थागत व सोशल मीडिया आदि से संकलित किया गया है। जिसका कॉपी राईट संबंधितों के पास ही है

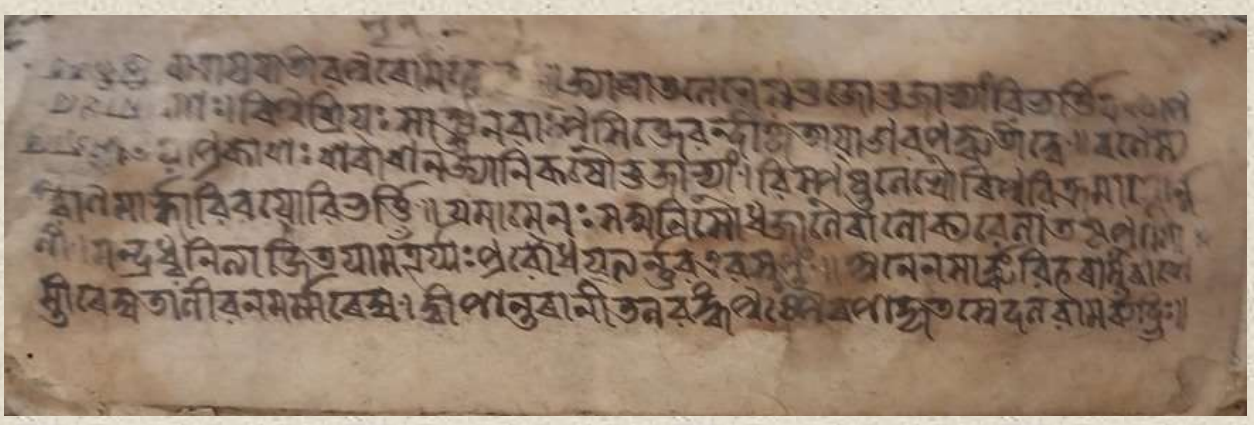

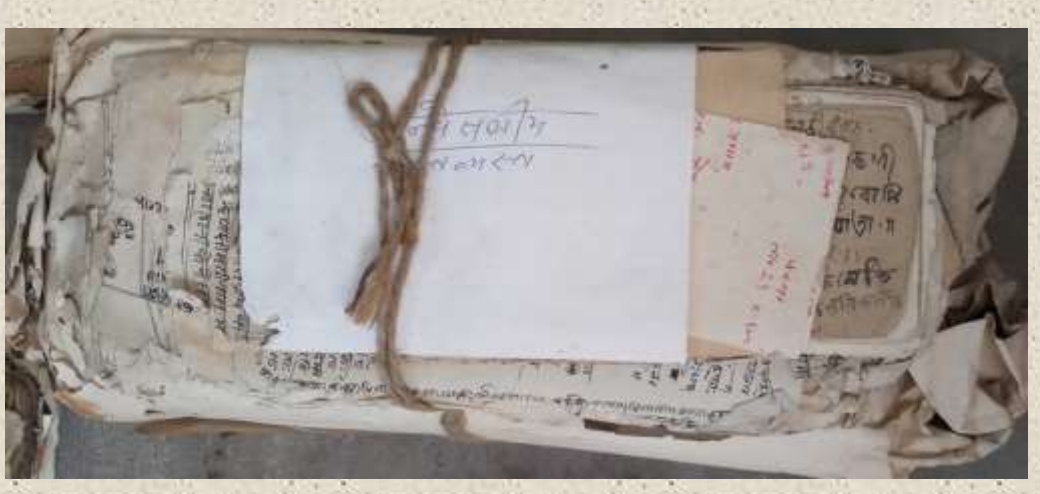

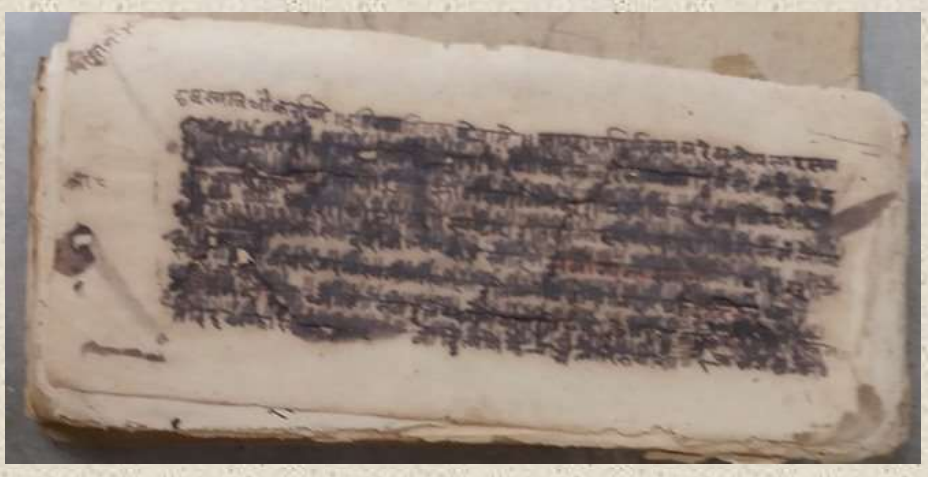

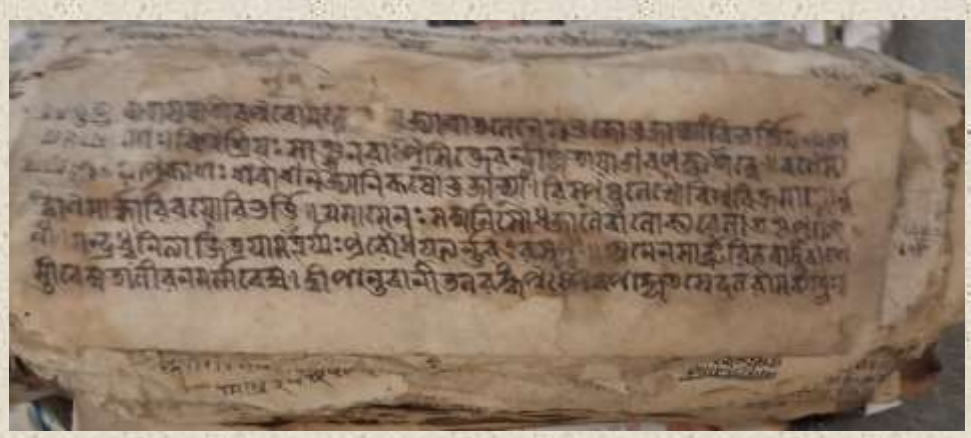

खंड – तीन : डाक बचन

मिथिला के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्व :डाक बचन

परिचय : -

हिंदू धर्म-ग्रंथों के अनुसार समाज को कर्म के आधार पर विभाजित किया गया था। प्राचीन भारत में वर्ण व्यवस्था अथवा चतुर्वर्ण व्यवस्था के अतिरिक्त पेशा अथवा व्यवसाय के नाम के अनुसार जाति व्यवस्था भी प्रचलित थी। वस्तुतः पेशा अथवा व्यवसाय के नाम को ही जाति की संज्ञा दी गयी थी, जिसके अनुसार लोहा का काम करने वाले को लोहार, चमरा के काम करने वाले को चमार (चर्मकार), लकडी का काम करने वाले को बढई, मिट्टी का बर्तन बनाने वाले को कुम्हार (कुम्भकार), गाय (गौ) पालन करने वाले को ग्वाला की संज्ञा दी गयी। आगे चलकर, कालांतर में जन्माधारित जाति व्यवस्था प्रासंगिक हो गया जिस कारण वर्तमान समाज में इसी का विकसित स्वरूप जाति-व्यवस्था के रूप में देखा जा सकता है। कर्म या जन्म आधारित जाति व्यवस्था के परिवर्तन पर वैसे तो समाज के विभिन्न विद्वाजनों में मतभेद भी है परंतु समाज का विकास सभी इन व्यवस्थाओं में व्याप्त कुप्रथा को

समकालीन समयानुकूल कसौटी पर कसने के बाद इसे परिमार्जित कर पुनर्प्रयोग में लाना ही उचित होगा, इस बिन्दु पर सभी विद्वाजन एकमत हैं। यह संभावित परिवर्तन अघोषित रूप से कहीं-कहीं देखने को मिलता है परंतु समग्रता से सर्वमान्य नहीं हो पाया है।

सामाजिक लोक जीवन के चुनौतियों व जीवन की कठिनाइयों को सरल बनाने हेतु लोग धर्म, शास्त्र, लोकनायकों के जीवन, मिथकों, शोधों तथा विद्वजनों के बचनों आदि से संदर्भ लेकर अपने कठिनाइयों को आसान बनाते हैं। मानव समाज के हर भौगोलिक क्षेत्र में इस प्रकार का स्थानीय स्रोत हैं। इन स्रोतों स्थानीय मिथक, सामाजिक प्रचलन, लोकनायकों का उपदेश आदि हैं जिससे संदर्भ लेकर वर्तमान समाज अपना दिशा निर्देश तय करता है।

मिथिला का समाज ऐसे ही एक महापुरुष "डाक" के सीख भरे कहे 'दोहे', जिसे स्थानीय भाषा में फकड़ा भी कहा जाता है, से सीख लेते हुए अपनेजीवन की समस्याओं को सरल बनाते आ रहे हैं। डाक के इन्हीं दोहे या फकड़े को

डाक बचन के रूप में जाना जाता है। डाक बचन मिथिला क्षेत्र का सर्वप्रमुख मौखिक लोक परम्परा है। सैकड़ो वर्षों तक वाचिक स्वरूप में रहने के बाद इसके कुछ कुछ अंश छिट-फुट अंश प्रकाशित भी हुए हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि 'डाक बचन' गोपकान्या और पंडित बराहमिहिर के पुत्र "डाक" की रचना हैं तो कुछ विद्वानों का मानना है कि "डाक" एक व्यक्ति नहीं थे बल्कि कालांतर में एक विकसित लोक परम्परा हैं। इस विषय पर शोध जारी है। मिथिला में डाक बचन पर गंभीर रूप से काम करने वाले विभिन्न विद्वानों से बातचीत करने के पश्चात यह पाया गया कि इस बिन्दु पर विद्वानों एयर विशेषज्ञों में मत्तभिन्नता है। कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय के व्याकरण विभाग के विभागाध्यक्ष डा0 शशीनाथ झा, जिन्होने डाक बचन का संकलन भी प्रकाशित किया है, सहित कई विद्वानों का मानना है कि डाक एक व्यक्ति थे। डाक के जन्म का प्रसंग कुछ इस प्रकार है :-

पंडित बराहमिहिर एक बार कहीं जा रहे थे और यात्रा के दौरान रात हो गई। वहीं रास्ते में एक ग्वालों की बस्ती थी। इसी बस्ती के एक घर में पंडित बराहमिहिर ने विश्राम करने का फैसला लिया। पंडित

बराहमिहिर प्रकांड विदवान और अच्छे ज्योतिष थे। रात में ग्वालों के साथ ज्योतिष गणना से समय साल का हालचाल सहित अन्य विषयों पर बातचीत होने लगी। उस दिन का लग्न विशेष था, उस रात समय विशेष में स्त्री-पुरुष के संसर्ग से जो बच्चा जन्म लेगा वह अत्यंत प्रतिभाशाली होगा। यह बात जब ग्वालों को पता चला तो उनके ग्वालों के सरदार ने अपनी कुंवारी बेटी के साथ पंडित बराहमिहिर को संसर्ग करने का आग्रह किया। उस रात पंडित बराहमिहिर ने ग्वाले की लड़की के साथ समागम किया। जिससे "डाक" का जन्म हुआ।

अब यहाँ एक प्रश्न उठता है कि क्या उस समय नियोग परंपरा की मान्यता समाज में थी? क्या समाज में महिलाओं को इतनी स्वतन्त्रता थी? क्या सामाजिक लोकजीवन में विवाह पूर्व पर स्त्रीगमण या परपुरुष गमण को कलंक के दृष्टि से नहीं देखा जाता था। क्या एक पिता अपने कुंवारी पुत्री को पर पुरुष गमण की आज्ञा दे सकती थी? इस सभी प्रश्नों के संदर्भ में कई विद्वाजनों का मानना हैं कि तत्कालीन समाज व्यवस्था में इस सभी की मान्यता थी। स्त्री-पुरुष कोकरमौर प्रकृतिके आधार पर बराबर के

अधिकार थे तथा उन्हे सामाजिक रूप से विवेकपूर्ण निर्णय लेने व उसपर अमल करने का अधिकार था। बितते हुए समय के साथ समाज के प्रथा श्रेणी के लोगों ने समयानुकूल या एक प्रकार से अपने सुविधानुसार परिवर्तन का परिणाम आज का सामाजिक स्थिति और मान्यता है। इस प्रश्न के उत्तर तलाशने के क्रम में कई विद्वानों से बात हुई परंतु डाक को व्यक्ति मानने वालों का मत है कि उस समय में समाज में नियोग परंपरा को मान्यता थी तथा स्त्रियाँ को स्वतन्त्रता थी। सुबह तो पंडित बराहमिहिर अपने यात्रा को निकाल पड़े परंतु 9 महीने पश्चात उस गोप कान्या ने एक ओजस्वी पुत्र को जन्म दिया, जो डाक हुए। डाक के बचपन का पालन-पोषण उनके मातृक में हुआ इसलिए उन्होने ब्राह्मण पुत्र होते हुए भी अपनी सामाजिक पहचान के लिए अपनी माँ की सामाजिक पहचान को अपनाया और खुद को ग्वाला कहलाना ही उचित समझा। यहाँ यह ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है कि पुरुष प्रधान समाज में एक बच्चा अपने माँ के पहचान को अपनाता है यह एक क्रांतिकारी कदम रहा होगा। यही कारण है कि डाक अपनी रचान में अपने लिए अनेकों बार "गोआर" यानी ग्वाला शब्द का उपयोग किया है:

सन्मुख दक्षिण दोष नहीं हो, कहथि "डाक" युक्ति इहों।

मामा फाबाए जेठ आषाढ़, कान्या वियाही कहथि **गोआर**॥

पंद्रह तीस चौदह नौ चारि, त्यागि माध्यम कह शेष **गोआर**।

रवि कुनह शनि बासर के जोड़ि, अधपहरा भद्रा के छोड़ि॥

पछबा सं उघडए मेघ, विधवा कराए सिंगार।

ओ ऊढ़ड़ए ओ वारिसए, कहि गेल **डाक गोआर**॥

डाक ने सभी जातियों पर टिप्पणी की है -

बाभन, कुत्ता, हाथी, तीनू अपने जात को खाती।

कायथ, कौआ, रोड, तीनू जाती बटोर॥

मैथिली लोक साहित्यकार, लोककला मर्मज्ञ, मैथिली अकादेमी, पटना के पूर्व अध्यक्ष व साहित्य अकादेमी पुरस्कार से पुरस्कृत डा0 महेंद्र नारायण राम ने

डाक के मूल गाँव व काल आदि का खोज भी कर लिया। डा0 राम का कहना है कि डाक का जन्म वर्तमान मिथिला (भारत) के नेपाल सीमा के पास मधुबनी ज़िला के लौकही प्रखण्ड के अंतर्गत जटही गाँव में हुआ है। डा0 महेंद्र नारायण राम ने डाक के डीह का पता लगाकर, बिहार सरकार के वर्तमान राजस्व नक्से पर इस प्रकार चिन्हित किया है:

मौजे – जटही,
ग्राम-जटही,
अंचल –लौकही
थाना – लौकही
थाना नंबर- 53
तौजी नंबर – 6424
ज़िला - मधुबनी, बिहार

जटही गाँव में आज भी 15 बीघा मे एक तालाब है जिसे डाक पोखरि के नाम से जाना जाता है। लोगों का मानना है कि डाक को ज्योतिष का भी बहुत ज्ञान था तथा वह अपनी मृत्यु के बारे में जानते थे। डाक को पता था कि उनकी मृत्यु पानी में डूबने से होनी है। कहा जाता है कि डाक की मृत्यु भी पानी में डूबकर ही हुई थी। इसलिए डाक अपने सिर पर बाल भी नहीं रखते थे कि पानी में बाल ना उलझ जाए। लोगों का मानना है कि जटही गांव के इसी

तालाब के बीच में गड़े लकड़ी के स्तम्भ, जिसे मैथिली में 'जाइठ' कहते हैं, में शिखा के उलझने से हुई थी। और अपनी मृत्यु को प्राप्त कराते हुए डाक ने अंतिम बचन कहा था –

इ जुनि बुझू डाक निर्बुद्धी

नाशय काल विनाशय बुद्धी॥

वहीं लोक कला मर्मज्ञ व नाटककार श्री महेंद्र मलंगिया का मानना है कि डाक एक व्यक्ति न होकर कालांतर में विकसित लोक परंपरा है। इसके पीछे उनके तर्क व तथ्य भी है। श्री महेंद्र मलंगिया डाक के काल और उस समय के राजनीतिक व सामाजिक परिवेश को लेकर तर्क देते हैं। साथ ही डाक या डाक जैसी परंपरा अन्य क्षेत्रों – जैसे असम में डाक नाम से, राजस्थान से उत्तर प्रदेश तक हिन्दी पट्टी में भांड/भद्दारी भड्डुरी जैसी समान परंपरा लोकाचार में देखा जा सकता है।

प्रो0 (डा0) नबोनाथ झा के अनुसार – डाक बचन मैथिली साहित्य का एक प्रमुख आदिकालीन सामाग्री है। मैथिली साहित्य के आदिकाल के संबंध में कुछ मत्तभिन्नता महामहो उपाध्याय डा0 उमेश मिश्र ने आदि काल के संबंध में दो कालखण्डों – 1000 ईसवी से 1300 ईसवी तथा 1000 ईसवी से 1600 ईसवी का जिक्र किया है। वहीं डा0 सुभद्रा झा इनके विचार से सहमत नहीं हैं। इसी प्रकार के अनेकों वुडवजनों के बीच मैथिली साहित्य के आदिकाल पर मतभिन्नता है। इन बातों से स्पष्ट होता है कि सिद्ध साहित्य, डाक व घाघ बचनावली, प्राकृत पैगलम, लोकगीत व वर्नरत्नाकर मात्र मैथिली की आदिकालीन साहित्य है। डाक के काल के संदर्भ में प्रो0 (डा0) नबोनाथ झा ने जीवकान्त ठाकुर के संदर्भ लेते हुए कहते हैं कि डाक का काल ज्योतिरीश्वर के काल से पहले का है और उस समय मैथिली समस्त साहित्य पद्यमय था। यहाँ यात्रा प्रसंग का उल्लेख कराते हुए प्रो0 (डा0) नबोनाथ झा डाक बचन से यात्रा प्रसंग का उल्लेख करते हैं:

सुंदर शिशु युत युवती नारी ।

भरल कुम्भ युत हो पनिहारी ॥

दधि कोकिल पुनि लावामीन ।

इ सब ठीक नहि यात्रा हीन ॥

लगहरि गाय पिआबथि बाछा ।

विद्या दोष सब बिसरू पाछा ॥

अग्रजनि डाक ई देखी ।

शुभा यात्रा कहथि सब लेखी ॥

डाक बचन से यात्रा प्रसंग के ही दूसरे उदाहरण लेते हुए प्रो0 (डा0) नबोनाथ झा संदर्भ देते हैं –

वामे फणि पनि दहिन सियार, दही दही ले कहे गोआर ।

तकरो आगाँ भेटए मलाह, देखि मीन करी परम उछाह ॥

बरदा बनचर भराल घैल, वेश्या राजा देवता गैल ।

कहहि डाक यात्रा करु जानि, गेलहु लक्ष्मी देतह आनि ॥

डाक बचन के यात्रा प्रसंग में दिशा के संदर्भ में प्रो0 (डा0) नबोनाथ झा उदाहरण देते हुए कहते हैं :

सोम शनिचर पूब मे चालू ।

मंगल बुध उत्तर दिस कालू ।।

विफ़े दक्षिण करे पयाना ।

फेर नहि बुझू ताको आना ॥

रवि शुक्र जे पश्चिम जाए ।

हानि होए परंचु सुख नहि पाए ॥

प्रो0 (डा0) नबोनाथ झा डाक बचन को मिथिला के लोकजीवन में ज्ञान परम्परा का अमूल्य श्रोत व धरोहर बताते है। डाक बचन से मानव जीवन से

संबंधित - यात्रा, दिकशूल, वर्षा, फल, हवा, वर्षा, ज्योतिष, कृषि, कर्मकांड आदि के प्रसंग में अद्‌भुद ज्ञान दिया है। मिथिला के लोग कोई भी कार्य करने से पहले डाक बचन से संदर्भ लेकर निर्णय लेते हैं कि वर्तमान स्थिति-परिस्थिति में अमुक काम किया जाना उचित होगा या नहीं।

बहरहाल, डाक के जन्म पर मतभेद होते हुए भी उनकी रचनाओं पर एकमत हैं कि मिथिला के लोक जीवन मेँ डाक बचन का कमोवेश वही मान्यता है जो भारतीय संस्कृति मेँ भगवद्गीता का है। लोक जीवन के दैनिक चर्या मेँ होने वाली समस्याओं व प्रकरणों – गृहस्थ, खेती, वर्षा, वर्षफल, गृहस्थाधर्म, यात्रा, संस्कार, स्वास्थ्य आदि पर डाक की दृष्टी फकड़ा (दोहा) के रूप में "डाक बचन" में मिलती है। आमजन अपनी जीवनचर्या में जैसे भगवद्गीता, कबीर, चाणक्य आदि से संदर्भ लेते हैं उसी प्रकार मिथिला के लोग डाक का संदर्भ लेते हैं।

प्राचीन मैथिल समाज अपने जीवनचर्या में डाक के दर्शन को समाहित करते थे और डाक बचन सभी के कंठ में हुआ करता था। प्राचीन काल में समाज

के जीवन यापन का मुख्य और एकमात्र साधन कृषि और पशुपालन था। डाक बचन में माटी पानी से जड़े आहार व्यवहार, सुखाड़, बाढ़, पेड़ पौध रोपण, बैल खरीदने, उपचार नुस्खा, वास्तु संबंधी घर तैयारी में मुहुर्त, शकुन, उपनयन, मुंडन, बच्चों के पालन पोषण एवं शिक्षा आदि लोकोक्ति, काव्यमय टिप्पणी आज भी प्रासंगिक है। जैसे हत्या, लूट, बलात्कार, चोरी इत्यादि की उपज बुद्धि विनाश का उत्प्रेरण न्याय व्यवस्था में माना गया है। डाक वचन में - *ई जुनि बूझब डाक निर्बुद्धि, नाशहि काल विनाशे बुद्धि..* इस अपराध तथ्य को दर्शाता है। साथ ही सामान्य जीवन में भी विनाश के समय लोगों का बुद्धि नष्ट होने की स्वभाव इस पंक्ति में है। संपत्ति पर डाक वचन - *धन में धान और धन गाय, किछु किछु सोना और सब छाय...।* अर्थात धान से चावल, गाय से दूध एवं सोना से पैसा जीवन यापन के लिए यथेष्ट है।

डाक का समय 14 शताब्दी से पूर्व का है यह पता चलता है। डाक के जन्म स्थान आदि पर विद्वानों व शोधकर्ताओं में अभी भी एकमत नहीं है। ग्रामीण कवित्त लोकोक्ति की पंक्तियां डाक, घाघ, डंक, भादर इत्यादि रूप में पूरे भारत वर्ष में अनेक प्रांत के कई भाषाओं यथा बंगला विश्वकोश, कनौजिया

गोरखपुरिया, राजपुतानियां इत्यादि में भी देखा गया है। मिथिला में किसानों के कंठ से उनके मूल वाणी का प्रस्फुटन अनायास निकल पड़ता है जो उस समय की जरूरत होती है।

डाक बचन पाठ – डाक के हजारों दोहे आज मिथिला के सामाज में विद्यमान है। इन फकड़ों या दोहों का सम्पूर्ण संकलन नहीं हो पाया है। डाक बचन के कुछ अंश प्रकाशित भी हुए हैं , जिसमें प्राचीन तालपत्र के आधार पर "मैथिल डाक" संकलनकर्ता –पंडित श्री जीवानंद ठाकुर, प्रकाशक- मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा; "डाक विरचिता डाक बचन संहिता" संपादक डा0 शशीनाथ झा 'विद्यावाचस्पति', प्रकाशक-उर्वशी प्रकाशन, पटना सहित कुछ और पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ है। डाक बचन के लिए किए गए इस आध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि डाक द्वारा कहे गए बचनों का एक अंश ही पुस्तक में स्थान ले पाया है। अभी भी बहुत से डाक बचन लोक कंठ में ही संरक्षित है। डाक बचन के कुछ प्रमुख प्रकरणों का पाठ नीचे दिया जा रहा है ।

डाक बचन : खेती प्रकरण

बददा मूते खेत दहाए, खसई खेत जों बरद पराए।

गोदा झाड़ की मृदाझाड़, तौं नहिं नीक जौं खसै फाड़।।

ईशा टूटए सून हो फोर, लागनि टूटए बड़द लए चोर।

जूअठ टूटाए तों शुभ होय, जों धंसै कुदै लादेगोय॥

तत ज्ञानी कृपी भल होय, डाक कहै छथि निश्चिंत सोय।

खुर सिन्ह सौं माटी लीए, बहुत सुख की मनहि दीए॥

धान रोपबाक

काशी कुशी चौठी चान, आब कि रोपबह धान किसान।

भारे बिया बोझे धान, आबहु बैसह घर किसान।

अषाढ रोपी तान वितान, साओन रोपी नचिके धान।

भादव रोपी कोकडाक बान, तीनू काटी एक समान।

बापे-पुत्ते करी चास, बापक मुईने माएक आस।

अनका संग ने करी चास, ने ओ अन्न ने गामरि बास्।

वर्ष फल - साओन शुक्ल सप्तमी –

साओन शुक्ल सप्तमी, छपि कें उगथि भानु।

तों लागि मेघा बरसए, जों लगि देव उठाउन।।

साओन शुक्ल सप्तमी, रैनि होहिं मसिहारि।

कहए "डाक" सुन भांडरी, पर्वत्त उपजए सारि॥

साओन शुक्ल सप्तमी, रिमझिम वरिसए यारि।

सुतहु पिया निश्चिंत भय, बन्हए ने सारिक आरि॥

साओन शुक्ल सप्तमी, जों वरिसए घहराय्।

ता लागि मेघा वरसहिं, पुहमी धूरि मेटाए॥

साओन शुक्ल सप्तमी, छपि क' उगाए भानु।

मुसिन पुछए मूस स' कतय करब खरिहान॥

साओन पछबा भादव पूरबा, आसिनबहए ईशान।

कातिक कंता सिकियो ने डोलए, कतय क' रखब' धान।।

साओन शुक्ल सप्तमी, जों गरजे अधरात।

तों जाहु पिया मालवा, हम जाएब गुजरात॥

साओन शुक्ल सप्तमी, ठह ठह रैन करंत।

की जल भेटाए गंगा तट, की तिय कूप भरंत्॥

साओन शुक्ल सप्तमी, लुक दय उगय सूर।

हाँकहु पिया हरदा बरदा, मेघ गेलाए बडी दूर॥

साओन शुक्ल सप्तमी, निर्मल चान उगंत।

की जल भेटए समुद्र मे, कामिनि कूप भरंत।।

साओन शुक्ल सप्तमी, मेघ ना छाजए रैन।

कहहिं “डाक” सुन “भांडरी” वर्षा भ’ गेल चैन॥

साओन शुक्ल सप्तमी, गगन स्वच्छ जों होय।

कहहिं “डाक” सुन “भांडरी” फुहमी खेती होय॥

<u>वर्ण विचार –</u>

अ ए उ ए गरुड़; क ख ग घ मजार।

च छ ज झ सिंह; ट ठ ड ढ कल्याण।

त थ द ध नान; प फ ब भ भूत।

य र ल व हाथी श ष स ह मेष॥

<u>सामान्य प्रकरण</u>

छोट-छोट घर बान्ही चौघारा, नामे फार जोताबी दारा।

थोड-थोड बेच क किनथि मांछ, ताहि घर लक्ष्मी खल-खल नाच्॥

सौ छाडहु अरु कर’ पचास, नींच ऊंच क’ जोतह चास्।

नितहु खेती दोसरक गाए, जे नहि देखए तकरे जाए।

घर बैसल जे बनबथि बात, देह में वस्त्र ने पेट में भात।

कपड़ा पहिरी तीन दिना, बुद्ध बृहस्पति शुक्र दिना।

शनि जारए, रवि फाड़ए, सोम कराए सुडाह।

मंगल मारए जीव स', बुद्ध पहिर घर जाह।

नंगटे पहिरी, भुखले खाई, जहां मोन हुवाए तहाँ जाई।

साए मे सूर, हज़ार मे काना, सावा लाख मे ईचा ताना।

ईचा ताना कहे पुकार, हम मानी कुईरा स' हाइर॥

मांछक संग जे खिचरी खाए, मुइला बहुक नैहर जाए।

बाट चलैत जे गाबए गीत, कहथि "डाक" ई तीनू पतीत॥

कहथि डाक तों सुनह रावण, केरा रोपी आषाढ़ सावन।

तीन साए साठि जे केरा रोपए, आबि निश्चिंत घरही सुतए।

केरा रोपी काटी नहि पात, केरे देतहु धोती भात।

फागुन केरा रोपल जाए, मास-मास फल बाइसल खाए॥

तीन बीत्ते तेरह हत्थे, तीनि मासे तीन दिने।

भादव भदबा सी मी वारी, केरा रोपी दिन विचारि॥

जन्म लग्न स मंगल सात, चंद्रहु जनियह ई बात।

विधवा होइतह से कुमारि, कहए डाक ई ग्रह के विचारि॥

सातम सूर लग्न स जकरा, कहथि डाक पति छोरथि तकरा।

सातम शनि कें पाप जे देख', कन्या धरतह लमपट भेष॥

गर्भाष्टम बाभन के काल, एगारह वर्ष क्षत्री केर लाज।

बारहम वर्षे वैश्य केर बाल, मनुख अहि समय सबहि बेहाल॥

सोलह बाईस चौबीस पर्यंत, क्रम सौं ब्रात्य सावित्री कंत।

वर्ष शुद्धि कह "डाक" गोआर, पाँच सौ सातहु, करी विचार॥

मकर कलस मछली अरु मेष, वृष मिथुन मे धरू व्रत वेष।

द्वितीया, तृतीया पंचमी शुभवार, दशमी, एकादशी द्वादशी आर॥

संध्या गलमह अनध्या त्याग, कृष्णपक्ष ओ ग्रहण भाग।

गुरु दुनू के शुद्ध कर जानी, धर्मशास्त्र सं होए चैन॥

सन्मुख दक्षिण दोष नहीं हो, कहथि “डाक” युक्ति इहों।

मामा फाबाए जेठ आषाढ़, कान्या विवाही कहथि गोआर॥

रोहनि रेवती मूल ओ स्वाती, मृग, मग्घा अनुराधा नाथी।

द्वितीया तृतीया पासा एगारह, तिथि के उत्तम जानी विचारह॥

पंद्रह तीस चौदह नौ चारि, त्यागि माध्यम कह शेष गोआर।

रवि कुनह शनि बासर के जोड़ि, अधपहरा भद्रा के छोड़ि॥

दग्धा तिथि मसान्ते त्यागि, करी वियाह शुभ शुभ के जागि।

जों कन्या नहि रखबा योग, शुद्ध जानि करू वियाह सुयोग॥

सुख सुखराती देव उठान, तकरे तेरहे करह नवान।

तकरे तेरहे खेत खरिहान, तकरे तेरहे कोठी धान॥

शनि मंगल हो शिवराति, हड-हड पछबा बहए दिनराति।

नदियाक तीरे करियह चास, तकरहु रखियह थोडबे आस॥

पछबा सं उघडए मेघ, विधवा कराए सिंगार।

ओ ऊढ़ड़ए ओ वारिसए, कहि गेल डाक गुआर॥

बाभन, कुत्ता, हाथी, तीनू अपने जात को खाती।

कायथ, कौआ, रोड, तीनू जाती बटोर॥

राशि स्वागत विचार -

मेष मीन तिय दंडा दीस,

त उप्परि दिअ पल अठतीस।

वृष कुम्भ चौदन्डा मान,

पल एगारय भृगु तिरा मान॥

मिथुन मकर पल तीनु गुनू,

कर्कट तेतालीस धनू ।

सिंहहि वृश्चिक सप्तालीस,

तुल सह कन्या पल अठतीस ॥

सिद्धि योग -

नवमी चीठी चउदस भउ घोड़े,

पड़िय एकादशि छ्ठिक बिजोड़े

तिअ अटुअ तेरसि भूपुत्ते

सोआनि दुइ दोआदशी व उत्ते।

पांचनि पूनिमा दसई चेहकब,

सिद्धि योग एहु मुनिवर जंपए॥

यमघएट विचार -

जइ रविवारे मघा घनिष्ठा सम पुष्य विशाख लट्ठा ।

मंगल कृतिक मरण विरुद्धा, कर पुख फल्गुनी बुच बिरुद्धा ॥

बारे बेफ़्फ़इ मूल रेवती सुष्कहिं बारहि रोहनि स्वाती।

अव्णा शतमीश जइ शनिवारे एहु रामघट कहिअ गोआरे ॥

दग्घ तिथि –

शनि सत्ते सुष्क लए दुइ, छ्ठि बेह्फ़्फ़य होए बिरुइ

बुघ तीय दोअसि सूर ,मंगल दसमी परिहर दूर

होइए एकादिस सोमबारे दग्वविधि फ़ूर कहिअ गोआरे

पुब्बा दाइ पयाउने अरस चलन्ते चलहि

दिस बिद्दसे आइ वामे पाछे शुभ कहइ

जह अगोतय खाइ

योगिनी विचार -

पत्ती प्च्चा पर्सा दुआ नवे नवे योगिन हुआ

तिलियो पुच्छी भृगसनि ज्येश्ठा

भरनी बैसाख असलेश घनिष्ठा

चलिअ चौपा होइह युद्धी

जत्तहि चोलिअ तनहि सिद्धी

दूतियोंदुत चंद्र विचार-

मच्छाभेट्टा दाहिना अवसरे उत्तर काबि

घनइअ लद्दा समहिसम आवरि बोलि कुछू कहिअ

अउदिशा

प्रज्ञ विराड़ा सिंह सुनहि अहि मूसा गज मेस

अचे हले दुदुफरसे गुनि बर गशपान ब्लेख

भेशे गूखे चहु संपती गले बिराजे अतिकार युद्धी

नागे सिंघे होइअ खेड्डा सुनये घरि पछाडिय भेट्टा

आसन रेवये अवर घनिष्ठा

हत्थ आदि कये पाचम खड्डा

एकरा उत्तर दुइ गुरु मंत्री

कापल परिहइ न करइ भंती

संख्या सो परिहय रत्ता

बरखा शत एक जीवतु कत्ता

पुण्य पुनर्बसहु सुपरिहरइ रोहानि पालज अज्ञ

तीनि उत्तर परिहरइ जइ भत्तारे कज्ज

बीजबंधन विचार (तथा च डाक)

कटुइ धानि की आसन श्रवने

अद्या रेवये मृगकर मूले

मघा सबानी न कर विचार

बांउत सुरु गुरु शूकन बार

अमावस विचार

सेवक रे सुनु गणक बत्ता

अख्खर दोगुण चौगुण मत्ता

गामे नामे एक करिज्ज्इ

मुनि अंके भारि हरिज्जइ

एक जून जौ पावसि चारि

छाड़ि दलतिअ होइअ मारि

तोंचे मोंचे मान समान

बेबिझक जओ पावस ओरे

सर्वओ बित्त समहि तोरे

अउदिशा

पक्षी बसुशर पञ्च गजरि

षट केसरी सुनह लरचारि

अहिशर सार इन्दुशर एक

गजशर तीनि बेरिशर मेष

पक्षि तिराड़ा सिअ सुनइ

अहि मूला गज मेष

अचे हले मिलि दुइ फरसे

मुनिबर सपमानबसेश

मेसे मूसे बहुसंपती- गजे बिराड़े अतिकर सिद्धी

नाहे सिंह होइअ खेट्टा सुनहे धरि पांचों तिअ भेट्टा

अपर गौड़ीय प्रकार-

गामे ठामे नामे ज्ञान सोम सुशा बुद्ध पो तियाने आन

नागे सिंधे होइअ खोड्डा सुनहे धरि पाइअ तिअ मेड्डा

अकके कूजे लाबर ठाओ गोधन ज्ञान नाही बढाबय काओ

उदये हो ता जदप भाकड़ जदल भरि आबस भओ

चांदे बुधे लाचर ढाओ तारहि बसा संपति पुचजाओ

लच्छी थाकय ता हेरि गेई होइ चाँद ठबी रह पहरे

गुरुदीसा लाभ छ्ड़िहाका मूलहु चोरी बोलये चालये

सकुलये नए संचित धन न हरय

चंद्र विचार

मेष सिंह धनु पुंजे

दक्षिण कन्या वृष सकरंदा

पशिम तुला कुम्भ य मिथुना

उत्तर कर्कट ब्रिश्चिक मीना

अथ यात्रा डाक

आश्विन गमन कहय शुभ सिद्धी

भरणी मेल न जिव अबुद्धी

कीर्तिक काएक लंतह दिज्ज्ये

रोहनि गमनि मनहीमन

भृग सिर मेस रमस बढ़ाएउ

अदा गेल पलटि न आवये

सन्मुख दक्षिण दोष नहीं हो, कहथि "डाक" युक्ति इहों।

मामा फाबाए जेठ आषाढ़, कान्या वियाही कहथि **गोआर**॥

पंद्रह तीस चौदह नौ चारि, त्यागि माध्यम कह शेष **गोआर**।

रवि कुनह शनि बासर के जोड़ि, अधपहरा भद्रा के छोड़ि॥

पछबा सं उघडए मेघ, विधवा कराए सिंगार।

ओ ऊढ़ड़ए ओ वारिसए, कहि गेल **डाक गोआर**॥

डाक ने सभी जातियों पर टिप्पणी की है -

बाभन, कुत्ता, हाथी, तीनू अपने जात को खाती।

कायथ, कौआ, रोड, तीनू जाती बटोर॥

यात्रा प्रसंग -

सुंदर शिशु युत युवती नारी ।

भरल कुम्भ युत हो पनिहारी ॥

दधि कोकिल पुनि लावामीन ।

इ सब ठीक नहि यात्रा हीन ॥

लगहरि गाय पिआबथि बाछा ।

विद्या दोष सब बिसरू पाछा ॥

अग्रजनि डाक ई देखी ।

शुभा यात्रा कहथि सब लेखी ॥

रवि कय पान सोम कय दर्पण ।

मंगल कय किछू धनियाँ चर्वण ॥

बुधहि गुड़ ब्रहस्पती राई ।

शुक्र कहइ मोहे दही सोहाए ॥

शनि कहय मोर आदो भावय ।

सकल काज जीति घर आबाय ॥

ने सुनी भादवा ने दिकशूल ।

कहथि डाक अमृत समतूल ।।

विविध प्रसंग -

हथिया मटकय चित मडराय ।

घर बैसल गृहस्थ नितराय

असमय वरिसय झर झर बादर ।

समय मे होय मेघवा कादर ॥

सकल प्रजागण रोगे पूर ।

भयक कारणे डाक भेल चूर ॥

कौआ बीच मे कुकूर बाज ।

राति दिन जह्न याएह समाज ।।

कहथि डाक सुनु भांडरी रानी ।

ओहि देश मे भय अति मानी ॥

जं अगहन नहि बरसय मेघ ।

कटहर गाछ मे होयत घेघ ॥

कहय डाक जं होयत पानी ।

ठूठ ठाढि कहि गाछे किनी ॥

<u>संबन्धित समुदाय :-</u>

डाक बचन मिथिला क्षेत्र का सर्वप्रमुख मौखिक लोक परम्परा है। सैकड़ो वर्षों तक वाचिक स्वरूप में रहने के बाद इसके कुछ-कुछ अंश अलग-अलग समय और विद्वानों ने प्रकाशित भी किया है। कुछ विद्वानों का मत है कि 'डाक बचन' गोपकान्या और पंडित बराहमिहिर के पुत्र "डाक" की रचना हैं तो कुछ विद्वान इसे विकसित लोक परम्परा मानते हैं। प्राप्त श्रोतों के अनुसार समस्त भारत वर्ष में डाक के लगभग एक लाख बचन प्रसिद्ध है। मिथिला के लोक जीवन मेँ डाक बचन का कमोवेश वही मान्यता है जो भारतीय संस्कृति मेँ भगवद्गीता का है। लोक जीवन के दैनिक चर्या मेँ होने वाली समस्याओं व प्रकरणों – गृहस्थ, खेती, वर्षा, वर्षफल, गृहस्थाधर्म, यात्रा, संस्कार, स्वास्थ्य आदि पर डाक की दृष्टी फकड़ा (दोहा) के रूप में "डाक बचन" मेँ मिलती है।

आमजन अपनी जीवनचर्या में जैसे भगवद्गीता, कबीर, चाणक्य आदि से संदर्भ लेते हैं उसी प्रकार मिथिला के लोग डाक का संदर्भ लेते हैं। प्राचीन मैथिल समाज अपने जीवनचर्या में डाक के दर्शन को समाहित करते थे और डाक बचन सभी के कंठ में था। मैथिल समाज के सभी वर्गों के लोग खासकर कृषक व पशुपालक वर्ग इसके सबसे संवाहक और संरक्षक हैं। करीब 15-20 वर्ष पूर्व तक डाक बचन मिथिला के जनजीवन में कोई भी कार्य डाक के बचन के विपरीत नहीं किया जाता था। डाक बचन का संदर्भ लोगो के ज़ुबान पर ही रहता था। जिसका सबसे बड़ा साकारात्मक प्रभाव समाज को एकजुट रखता था। जैसे-जैसे इस प्रकार के अमूर्त ज्ञान परंपरा का ह्रास हुआ वैसे वैसे समाज में आपसे भेदभाव बढ़ता गया। समस्त मिथिला के व्यक्ति ही इसके संवाहक हैं।

डाक बचन का स्वरूप :

समान्यत: डाक बचन मिथिला का एक मौखिक लोक परंपरा है। आदि काल से डाक का फकड़ा (दोहा) लोक कंठ में ही थी तथा यह परंपरागत रूप से श्रुति के माध्यम से ही एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक यात्रा तय किया है। डाक

के बचनों की सैकड़ों सालों की इस यात्रा में अत्यधिक मात्रा में परिवर्तन हुआ है। विभिन्न काल खंड के इस फकड़ों में समकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव देखा जा सकता है। इन फ़कड़ों में भौगोलिक प्रभाव भी देखा जा सकता है।

यह बात तो सर्वमान्य है कि "पाँच कोस पर भाषा बदले और दस कोस पर पानी"। यह बात डाक के बचनों पर भी देखा गया है। परंतु एक ध्यान देने योग्य विशेषता है कि इन भौगोलिक और विभिन्न कालखण्डों के सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव के बाबाजूद डाक के बचनों के मर्म नष्ट या प्रभावित नहीं हुए हैं। डाक बचन की यात्रा मौखिक होते हुए भी इसके केंद्र में तत्कालीन समाज या विभिन्न परिवर्तनों के बाद अलग-अलग समयावधि के सामाजिक समस्याएँ नहीं दिखती है। डाक बचन के फकड़ों के केंद्र में कृषि, घर, मौसम, सामाजिक समरसता, पारिवारिक व व्यक्तिगत अनुशासन, सामाजिक संरचना को सुदृढ़ बनाने की सीख, ज्योतिष, तंत्र आदि मिलते है। कालांतर में बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से अब तक कुछ लोक कलाविदों ने इसके कुछ अंश को लिपिबद्ध भी करवाया है।

डाकबचन के फकड़ों को लयबद्ध बनाकर इसका नाटकीय व सांगीतीक प्रस्तुति भी तैयार किया गया है। वैसे तो डाक के फकडों का आक्षेप मैथिली साहित्य में कहीं-कहीं उद्धहरण के रूप में में देखा जाता रहा है परंतु पूर्ण रूप से यह प्रदर्शनकारी कलाओं में नहीं देखा जा सका था। पिछले कुछ दिनों में डाक के फकड़ों की नाट्य व सांगीतिक प्रस्तुति भी देखने को मिल रही है। डाक बचन नाम से एक अलग लोक नाट्य शैली देखने को मिल रही है।

इस शैली में डाक के फकड़ों (बचनों) की प्रस्तुति लोक शैली में की जाती है। जिसमें एक कलाकार डाक या डाक का प्रतिनिधि होता है जो आम तौर पर नाटकों में विदूषक जैसा होता है। तथा कुछ पात्र ग्रामीण परिवेश के सैनिक समस्याओं पर अलग-अलग विषयों पर विदूषक या डाक से सलाह मशवरा कराते है। डाक का संवाद ज़्यादातर गेय में होता है तथा अन्य पात्रों का संवाद गद्य में होता है। दल में एक वादक दल भी होता है जो संगीत देने के अलावे कोरस का काम भी करता है। इन वादकों का वाद्य बजाने का तरीका मिथिला

के पारंपरिक कीर्तन जैसा होता है। दल के कोरस में एक हरीबोलबा बोलने बाला भी होता है जिसकी प्रमुखता होती है। डाक शैली के इस नाट्य प्रस्तुति में डाक बचन में उल्लेखित मूल समस्यों के अलावे समसायिक समस्याओं को भी स्थान दिया जाने लगा है।

डाक बचन के लिखित व लोक कंठों से एकत्रित फकड़ों में सभी सामाजिक रीति-रिवाज़, प्रथा, चलन आदि को ही वाचिक माध्यम से सुदृढ्ढ करने की काम किया गया है ऐसा इसके अध्ययन से पता चलता है। डाक बचन में रेखांकित विषय - कृषि, घर, मौसम, सामाजिक समरसता, पारिवारिक व व्यक्तिगत अनुशासन, सामाजिक संरचना को सुदृढ़ बनाने की सीख, ज्योतिष, तंत्र आदि समाज अपने पारंपरिक ज्ञान भंडार को विकसित कर उसे जीवन में उतारने के लिए प्रेरित करता है। मूल रूप से डाक वचन सामाजिक रीति रिवाज़ या किसी प्रकार का कोई अनुष्ठान नाही है परंतु व्यक्ति को ज्ञानी अवश्य बनाता है।

डाक बचन की पीढ़ी दर पीढ़ी यात्रा श्रुति के माध्यम से तय किया है। आज भी डाकबचन का विशेष भाग लोक कंठ में ही विद्यमान है। परंतु डाक बचन

कोई गाथा, महिमा, किस्सा, किसी का जीवन चरित्र आदि नही है। डाक बचन की मान्यता आज मिथिला में, यह मिथिला के ज्ञान परंपरा के रूप में विद्यमान है। कहा जाता है कि मिथिला के लोग अपनी हर कार्य और समस्या का समाधान डाक बचन से किया करते थे।

डाक बचन एक बाछिक लोक परंपरा है। इसलिए इसके संरक्षक व संवर्धन का दायित्व समस्त मैथिल समाज का है। बीसवी सताब्दी के पूर्वार्द्ध में कुछ लोक मर्मज्ञों तथा विद्वानों ने डाक के फकड़ों तथा तत्कालीन सामाजिक समस्याओं पर डाक की दृष्टी पर पुस्तकें भी रचित की है। परंतु डाक बचन के संवहन व संरक्षण का दायित्व मैथिलो की सामूहिक है।

वर्तमान संचार तंत्र से डाक बचन का अंतरसंबंध -

डाक बचन मिथिला का प्रमुख बाचिक लोक परंपरा है। जीवन के विभिन्न पहलुओं व समस्यों पर डाक द्वारा कहे गए दोहे आम जनों का ज्ञानवर्द्धन कराते है। लोग अपनी नीजी जीवन की समस्याओं को सुलझाने में डाक बचन से संदर्भ लेते है। डाकबचन की मान्यता मैथिल समाज में वही है जो भारतीय समाज में श्रीमद्भगवत गीता का है। यह मौखिक लोक परंपरा वर्तमान में

संचारित तत्वों से उपेक्षित रहा है। वर्तमान संचारित तंत्र में अभी तक उपेक्षित डाक बचन का संरक्षण व संवर्द्धन वर्तमान में उपलब्ध तकनीक की सहायता लेकर किया जाना आवश्यक है।

डाक बचन का सामाजिक व सांस्कृतिक मायने -

जिस प्रकार समाज के अन्य सामाजिक – सांस्कृतिक मान्यताओं व विधाओं के साथ हुआ है कुछ वैसा ही मिथिला में डाकबचन के साथ भी हुआ है। वर्तमान में भौगोलिक दृष्टि को प्राथमिकता देते हुए परिवर्तित हो रहे सामाजिक दृष्टिकोण, जिसका असर सामाजिक मान्यताओं पर भी देखा जा सकता है, का प्रभाव देखा जा सकता है। इन परिस्थितियों में भी समाज का बुद्धिजीवी वर्ग अपने अमूर्त मान्यताओं के सरकसन को लेकर संघर्षरत है।

जैसा कि ऊपर भी कहा गया है, मिथिला में डाक बचन का वही महत्व है जो भारतीय संस्कृति में श्रीमद्भगवत गीता का है। मिथिला के लोग अपने जीवन के विभिन्न समस्याओं व कार्यों में डाक से ही संदर्भ लेते है। आज भी मिथिला के किसान खेती करने में डाक के संदर्भ को अपनाते हैं। जैसे– धान के

फसल की बुआई से कटाई तक डाक के फकड़ा के अनुसार ही करते है।

काशी कुशी चौठी चान, आब की रोपबह धान किसान

मतलब भादब शुक्ल पक्ष चतुर्थी तिथि को मिथिला में चंद्रमा के निमित चौठीचान (चौठ्चंद्र) नामक त्योहार होता है। किसानों का कहना है इस दिन के बाद धान नहीं बोना चाहिए।

भादब, भदबा सी मी बारि, केरा रोपी दिन बिचारी

यानी भादब मास, भदबा, तथा जिस तिथि के अंत में सी या मी हो उस दिन केला नाही बोना चाहिए। जैसे पंचमी, सप्तमी एकादशी, आदि-आदि।इस प्रकार आज भी मिथिला के समाज में बुजुर्ग डाक बचन का अनुसरण करते हैं।

डाकबचन के संरक्षण के लिए सुझाव –

- देश के सभी भागों में स्कूल से उच्च शिक्षा तक "अमूर्त सांस्कृतिक विरासत" विषय को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाना।
- डाक बचन के डाक बचन के प्रकाशित और अप्रकाशित बचनों या फकड़ों को संकलित किया जाना।
- सभी संकलित डाक के बचन को समग्र रूप से प्रकाशित किया जाना।
- डाक बचन का सामाजिक-सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक सहित अन्य संदर्भों को रेखांकित कराते हुए विद्वानों व लोककला मर्मज्ञों द्वारा शोध किया जाना
- शोध के पश्चात सभी बिन्दुओं पर सामाजिक रूप से गंभीर विमर्श किया जाना
- डाक बचन के फकड़े को तथा इसपर शोधपरक आलेखों को विभिन्न स्तर पर स्कूल/कॉलेज के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना।
- डाक बचन के प्रस्तुति को प्रोत्साहन

डाक बचन के व्यवहार, जीबन्तता और भविष्य -

वर्तमान में बदल रही सामाजिक मान्यता और लोकव्यवहार में आत्मकेंद्रित विचार की श्रृंखला, समग्र रूप से कलुषित व कुंठित समाज के निर्माण का प्रमुख कारण रहा है। इस वीभत्स परिस्थिति में पुरानी मान्यताओं और विचार से आधुनिक विचारों का एक प्रकार का संघर्ष चल रहा है। इन द्वंदों से संघर्ष करने में डाक बचन जैसे अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्व महत्वपूर्ण हथियार साबित हो सकता है।

मूल पञ्जि – विदेह द्वारा संरक्षित किए गए पञ्जि

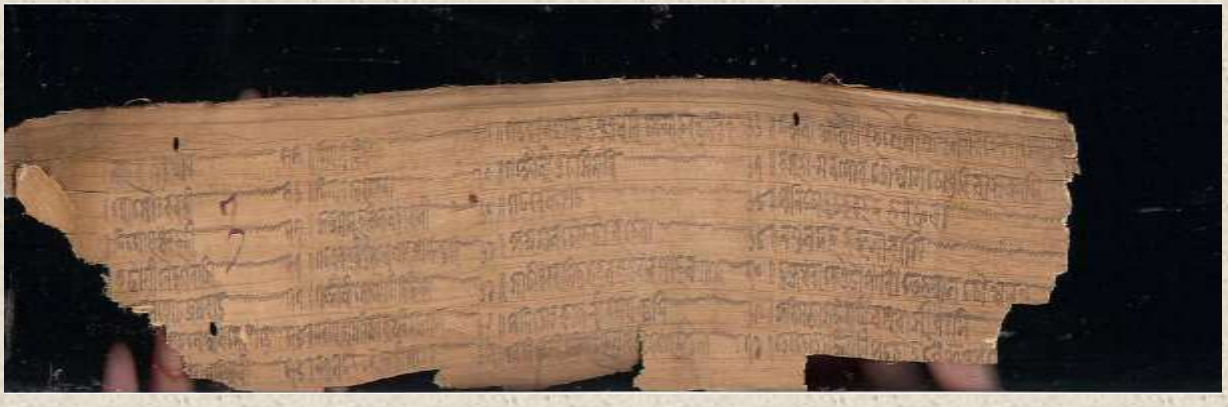

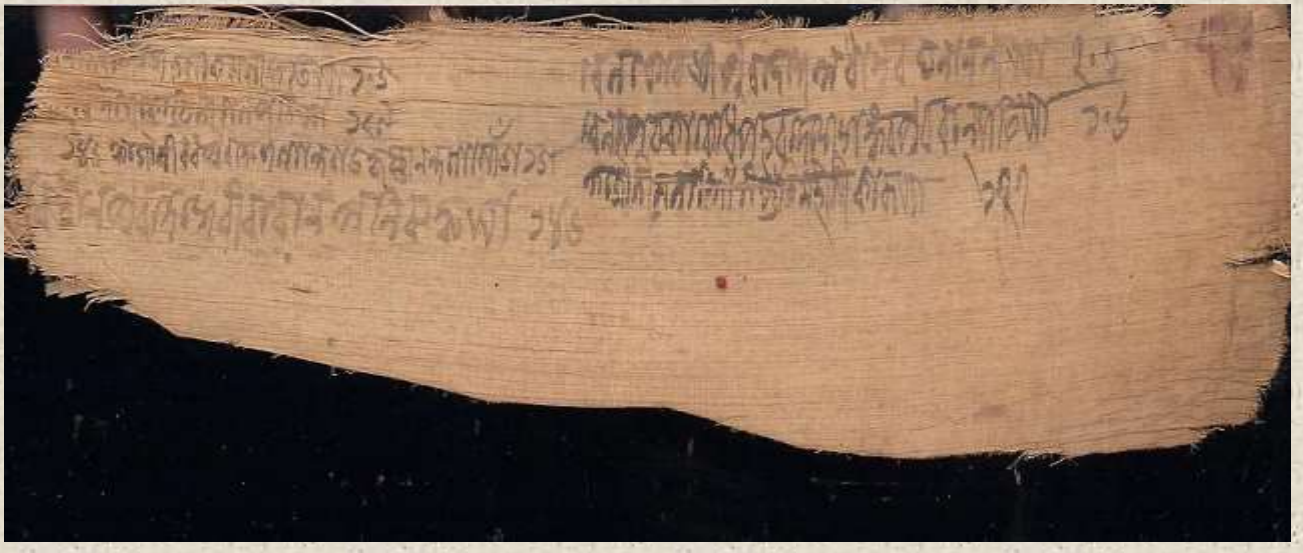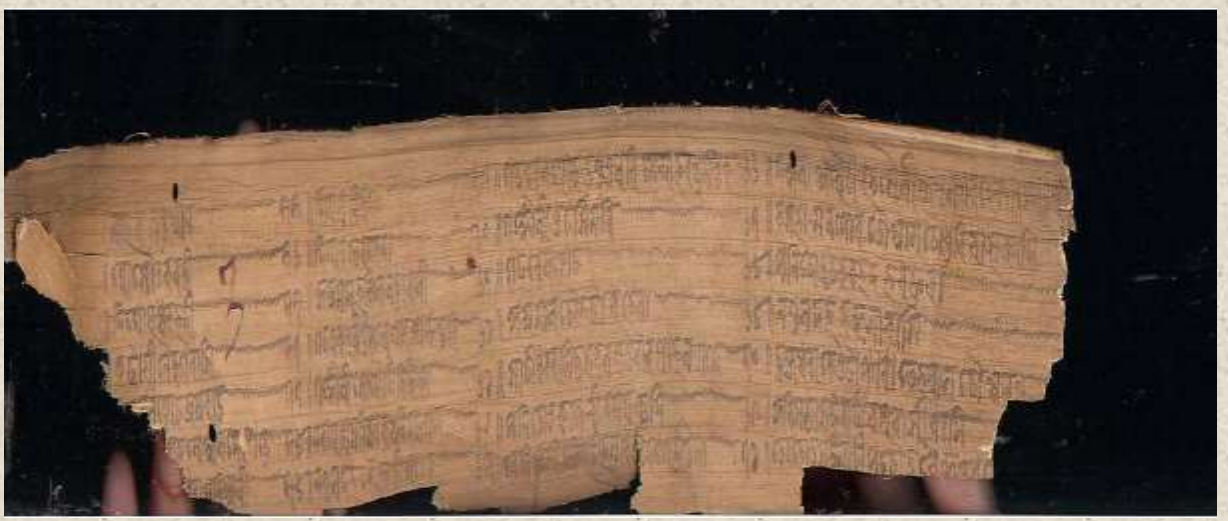

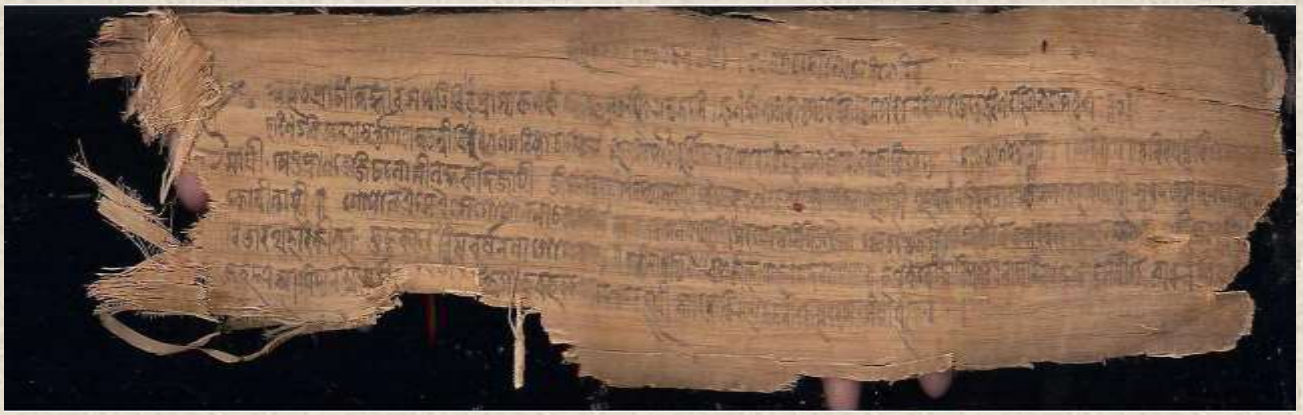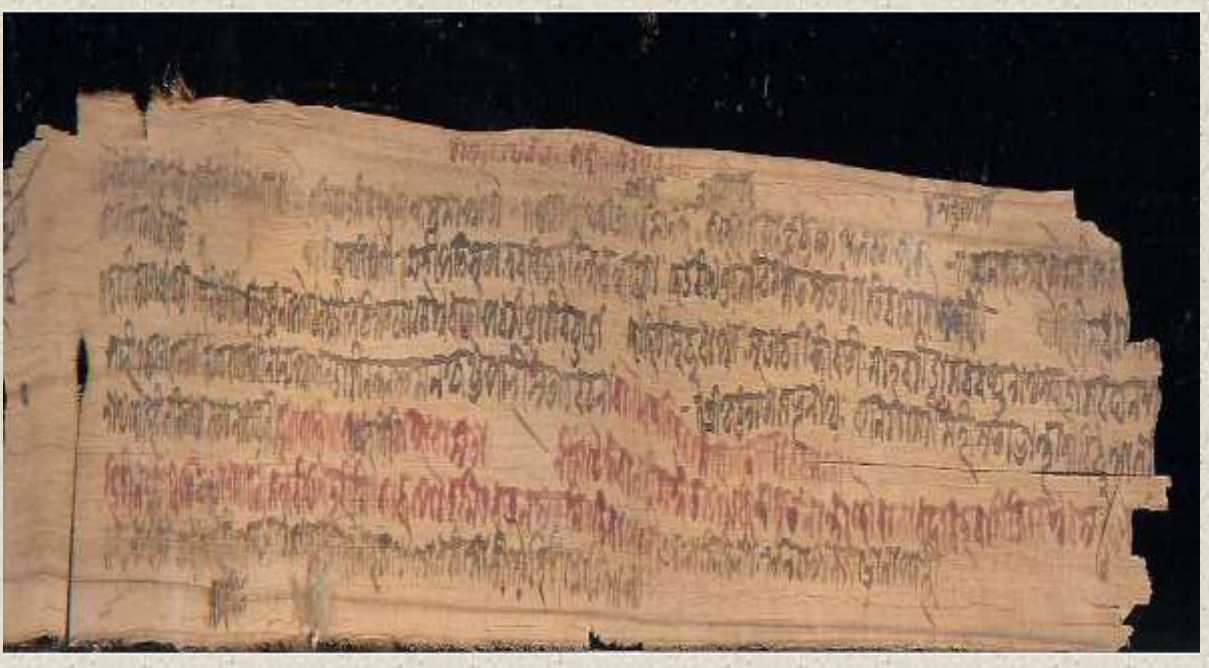

पञ्जि प्रबंध और सौराठ सभा के संरक्षण व्संवर्द्धन हेतु सामाजिक प्रायास

The Telegraph

KONKONA, THE DIRECTOR t2 PAGE 13

CHEATING GAFFE FOREIGN

20 PAGES PATNA TUESDAY 30 MAY 2017 Rs 4.50 XXYE www.telegraphindia.com

Group tries to revive 700-year-old custom

New push for Maithil marriage tradition

ROSHAN KUMAR

A group of people in the Mithila region has come forward to revive a 700-year-old community congregation to arrange marriages.

At a time when people are using marriage bureaus and matrimonial websites, many people in the region still depend upon the Saurath Sabha or Sabha Gachhi, as the congregation is alternatively called, to fix marriages. Many bachelor Maithil men come here from far-off places in search of suitable brides within the community.

The Sabha, which gets its name from a place in Madhubani district called Saurath, has lately seen a decline in interest and participation.

"Maithils of the world must come forward to rebuild this institution that played a key role in strengthening the way marriages used to be solemnised," said Birbal Jha, chairman of the Mithilalok Foundation that is working for the revival of the tradition. "This unique model of marriage arrangement faces an acute crisis," Jha added.

Members of the Saurath Sabha in Madhubani.
Telegraph picture

The foundation is organising a Saurath Sabha or Sabha Gachhi from June 25 to July 3 during which thousands of Maithil youth will assemble to impress the fathers of prospective brides.

The foundation has also written to chief minister Nitish Kumar, urging him to build a marriage hall at Saurath, push for digitisation of the marriage registry and genealogical records, and restore the Sabha land by removing encroachment.

"We have invited people from across the globe," Jha said. "Many families from the Darbhanga/Madhubani region living in places like Chennai and Bangalore have said they will participate. "Invitation letters have been sent to people with roots in the Mithila origin living in Poland, US and UK, and we are also spreading the word through social media."

Pune-based Rantneshwar Jha, former head of history at Lalit Narayan Mithila University, said one of the main objectives of the traditional Saurath Sabha was to curb evil practices associated with arranged marriages. "Till two decades ago, Saurath Sabha used to attract more than 1 lakh people from across the country," he added.

The Bihar tableau at the Republic Day parade in New Delhi in 2009 had featured the Saurath Sabha.

हकार

मान्यवर,

मिथिलाक गौरवशाली परम्पराक बीच सदि सं सौरठ सभा सांस्कृतिक धरोहर रहल अछि। देश क 'गणतंत्र आ प्राचीन संस्कृति सं आह्लादित विदेह नगरी मे ''सभा'' मिथिला के विद्वत जन और समाजक बीच संवादक एक मात्र जरिया छल। मिथिला सं भेल भारी पलायन सभा क मार्यादा आ लोकपरम्पराक धारा के अवरुद्ध केलक अछि। मिथिलाक हस्तकला/ हस्तकरघा निपत्ता भ चुकल अछि। मिथिलालोक अपनेक गरिमामयी उपस्थिति मे मैथिल समाज और विद्वत जन के बीच संवाद क टूटल तार के एक बेर फेर जोड़बाक कोशिश कय रहल अछि।

कार्यक्रम

उदघाटन एवं परिचर्चा

समय : संध्या 3 बजे, दिनांक :25 जून, 2017

स्थानः सभागाछी,सौराठ, मधुबनी, बिहार

सहयोग

Mithilalok Foundation
मिथिलालोक फाउन्डेशन

निवेदक

संचालक समिति सौराठ सभा

ऐतिहासिक सौराठ सभा समिति

सम्पर्क सुत्रः 8986315358, 7979769463

को चलेगा जनसम्पर्क

रहिका। आगामी सभावास 25 जून को लेकर सौराठ सभा विकास समिति की बैठक की अध्यक्षता पूर्व जिप अध्यक्ष सतीश चन्द्र मिश्र की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में भाग लेने वाले लोगों ने सभावास का उद्घाटन, आगत अतिथियों के स्वागत एवं अधिक से अधिक जन भागीदारी के लिए विचार-विमर्श किया।

सौराठ सभा विकास समिति के सचिव ने कहा कि जन सम्पर्क अभियान चलाकर लोगों को भाग लेने के लिए प्रेरित किया जायेगा। मिथिलांचल के नव पीढ़ी के लागों की आकांक्षा है कि पुनः सौराठ सभा कन्या दान करने की पावन वैवाहिक स्थल के रुप में प्रसिद्धि पा सके। बैठक में शिक्षाविद प्रो. गंगा राम झा ने कहा कि सौराठ से ही पंजी प्रथा एवं कुलशील परिचय की परम्परा की शुरुआत हुई।

सौराठ सभा को बचाना अनिवार्य : कुलपति

रहिका(मधुबनी), संस : मैथिल ब्राह्मणों की विश्व प्रसिद्ध नौ दिवसीय वैवाहिक सौराठ सभा का संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपित डॉ. सर्वनारायण झा ने दीप जलाकर उद्घाटन किया। आयोजन तीन जुलाई तक होगा।

उद्घाटन भाषण में कुलपति डॉ. सर्वनारायण झा ने कहा कि सौराठ वैवाहिक स्थल दो चीजों के लिए विश्व में प्रसिद्ध है-वैवाहिक निर्णय स्थल और पंजी प्रथा। यहां के पंजीकार के पास गत सात सौ साल तक का मैथिल ब्राह्मणों की वैवाहिक परंपरा का दस्तावेज है। कहा कि हमें हर हाल में इस धरोहर को बचाना होगा। देश में ही नहीं, विदेशों में भी भारी संख्या में मैथिल ब्राह्मण रहते हैं। जिनके पास सभा या गतिविधि के बारे में सही समय पर जानकारी नहीं मिलती। हमें सौराठ सभा के नाम से वेबसाइट बनानी चाहिए, जिसमें सभा की ऐतिहासिकता व पंजी के बारे में पूरी जानकारी अपलोड

सौराठ सभा का उद्घाटन करते कुलपति

हो। समय की मांग है की पंजी अभिलेख को ऑनलाइन किया जाए। समारोह की अध्यक्षता पूर्व जिप अध्यक्ष सतीश चंद्र मिश्र ने की। कुलपति को पाग व दोपटा से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मिथिला ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष प्रो. विष्णु कांत झा, मुख्य अतिथि विशेश्वर झा, मैथिली साहित्य अकादमी के कमलाकांत झा, वैद्यनाथ चौधरी, सौराठ सभा समिति के शेखरचंद्र मिश्र, कृष्ण कांत झा गुड्डू, मृत्युंजय झा, घनश्याम ठाकुर, षष्टीनाथ झा आदि उपस्थित थे।

सौराठ सभागाछी में हुआ शास्त्रार्थ

मधुबनी | नगर संवाददाता

मिथिलांचल की हृदयस्थली मधुबनी जिले के सौराठ सभा के प्रांगण इन दिनों विद्वानों से गुलजार रहता है। गुरुवार को सभागाछी में शास्त्रार्थ परिचर्चा आयोजित हुई। रविवार को जिले भर से नामचीन कवियों का जमावड़ा होगा। वे लोग मिथिला की संस्कृति पर अपनी कविताओं का पाठ करेंगे। सौराठ में दो जुलाई तक सभावास चलेगा। शास्त्रार्थ परिचर्चा समारोह की अध्यक्षता कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो.रामचन्द्र झा ने किया।

उन्होंने कहा कि इस सभा गाछी में वर के परीक्षणार्थ जो शास्त्रार्थ आयोजित होती थी। आज यह पुनः आयोजक द्वारा शास्त्रार्थ परिचर्चा आयोजित कार्य वस्तुतः अभिनन्दनीय है।

शास्त्रार्थ परिचर्चा का विषय था 'वर्तमानसन्दर्भे विवाहसंस्कारस्य प्रासंगिकता' अर्थात वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

सभावास कल तक

- आज जुटेंगे जिले भर के नामचीन कवि
- दो जुलाई तक चलेगा सौराठगाछी में सभावास

विवाह संस्कार का क्या औचित्य है। शास्त्रार्थ परिचर्चा में जगदीश नारायण ब्रह्मचर्याश्रम आदर्श संस्कृत महाविद्यालय लगमा, दरभंगा के युवा विद्वतमंडली में संस्कृत भारती के मधुबनी नगर संयोजक डॉ.रामसेवक झा, संस्कृत शिक्षक डॉ.गोपाल कुमार ठाकुर,पं. रुपेश कुमार झा, पं.अखिलेश मिश्र, पं.राकेश रौशन चौधरी, पं.धीरज कुमार शास्त्री सहित पंजीकारों के बीच दो घंटे तक शास्त्रार्थ हुआ।

परिचर्चा में डॉ.रामसेवक झा ने विवाह के शास्त्रीय एवं व्यवहारिक पक्षों पर पक्ष–विपक्ष पर चर्चा की। परिचर्चा के क्रम में विवाह के कुल आठ प्रकार हैं, जिसमें वर्तमान में प्रचलित ब्रह्म विवाह पर विस्तार से चर्चा हुई। साथ ही विभिन्न धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों पर विचार करते हुए षोडश संस्कार के अन्तर्गत विवाह संस्कार की आवश्यकता एवं उपयोगिता पर चर्चा हुई । संस्कार के आभाव में समाज में व्याप्त अत्याचार, दुराचार, भ्रष्टाचार, बलात्कार एवं भ्रूण हत्या पर भी शास्त्रीय पक्षों का विवेचन किया गया। पंजीकार ने विवाह में गोत्र परम्परा को शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक दृष्टि से अक्षुण्ण रखने की बात कही। आयोजक द्वारा आगत अतिथियों को पाग चादर से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक प्रफुल्ल चन्द्र झा, मनोज कुमार मिश्र, मृत्युंजय झा, डॉ. शेखर चन्द्र मिश्र, प्रभाष झा, धर्मेन्द्र झा, आशीष कुमार झा, नीलाम्बर मिश्र, शंकर झा, प्रमोद मिश्र, रतन झा सहित सैकड़ों की संख्या में कई गणमान्य लोग मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ.रामसेवक झा एवं परिचर्चा का समापन शान्ति पाठ से हुआ ।

डीएम ने पंजीकार से ली जानकारी

रहिका। डीएम ने भ्रमण के क्रम में मैथिल ब्राह्मणों के वैवाहिक पंजीकार सुप्रसिद्ध सौराठ सभा गाछी का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान सभा में उपस्थित पंजीकारों से सौराठ सभा की महत्ता एवं गरिमा से संबंधित विन्दु पर जानकारी प्राप्त की गई। पांच सौ वर्षों से ज्यादा से चली आ रही पंजीकरण प्रथा ,मिथिला के लोगों की वंशावली एवं पंजीकरण की प्रक्रिया का भी अध्ययन किया गया। पंजीकार विश्व मोहन चन्द्र मिश्र द्वारा इसकी सभ्यता ,संस्कृति एवं उपयोगिता के संदर्भ में विस्तृत रुप से बताया गया।

पंजी व्यवस्था के अन्तर्गत मैथिल ब्राह्मण मे २०(बीस) टा गोत्र होइत अछि ---

//

१.वत्स गोत्र - वाजसनेयि ५ प्रवर
२.शाण्डिल्य गोत्र - छन्दोग ३ प्रवर
३.काश्यप गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
४.पराशर गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
५.कात्यायन गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
६.भारद्वाज गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
७.सावर्ण गोत्र - वाजसनेयि ५ प्रवर
८.गार्ग्य गोत्र - वाजसनेयि ५ प्रवर
९.कौशिक गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
१०.अलाम्बुकाक्ष गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
११.कृष्णात्रेय गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
(कृष्णायन)
१२.गौतम गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
१३.मौदगल्य गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
१४.वशिष्ठ गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
१५.कौण्डन्य गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
(कौण्डिल्य)
१६.उपमन्यु गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
१७.कपिल गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
१८.विष्णुवृद्धि गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
१९.ताण्डिल्य गोत्र - वाजसनेयि ३ प्रवर
(ताण्डि)
२०.जातू कण्य गोत्र - ....

United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization
OFFICE OF THE UNESCO REPRESENTATIVE TO BHUTAN, INDIA, MALDIVES AND SRI LANKA
ASIA – PACIFIC REGIONAL BUREAU FOR COMMUNICATION AND INFORMATION

TEL. : 91-11-26713000
FAX : 91-11-26713001, 91-11-26713002
E-MAIL : newdelhi@unesco.org
INTERNET : http://unescodelhi.nic.in

UNESCO HOUSE
B – 5/29, Safdarjung Enclave
New Delhi - 110029
India

2 July 2003

TO WHOM IT MAY CONCERN

Dr. Kailash Kumar Mishra has been known to me as a sincere, bright, hardworking and original scholar since 1998. He had prepared an extensive village report of Saurath - a heritage village of Mithila, Bihar under the UNDP-UNESCO-IGNCA Project on **VILLAGE INDIA in 1999**. This report of Dr. Mishra was used by several scholars working in this project as a model study to arrange the data in the universal pattern.

Later, when UNESCO and Indira Gandhi National Centre for the Arts decided to quantify all of 87 village reports of the project in a systematic and statistical style, Dr. Mishra was assigned to develop a universal format of presentation. His format of presentation could be deemed very good. Clear, concise and easy to understand even to a layman, it gives not only the demographic pattern and ethnology, but also explains away the myths related to the village to understand the psyche.

I wish him success in his future endeavours and recommend his candidature for any research/academic post for which Dr. Mishra may be applying.

R.P.Perera
Chief Administration
Programme Officer/Culture

पञ्जि प्रबन्ध पर – श्री ऋषि वशिष्ठ

पञ्जि प्रबन्ध पर – श्री संजीव झा

पञ्जि प्रबन्ध पर सेमिनार

पञ्जि प्रबन्ध पर – श्री महेंद्र मलंगिया

पञ्जि प्रबन्ध पर – पञ्जिकार पंडित विश्वमोहन चन्द्र मिश्र

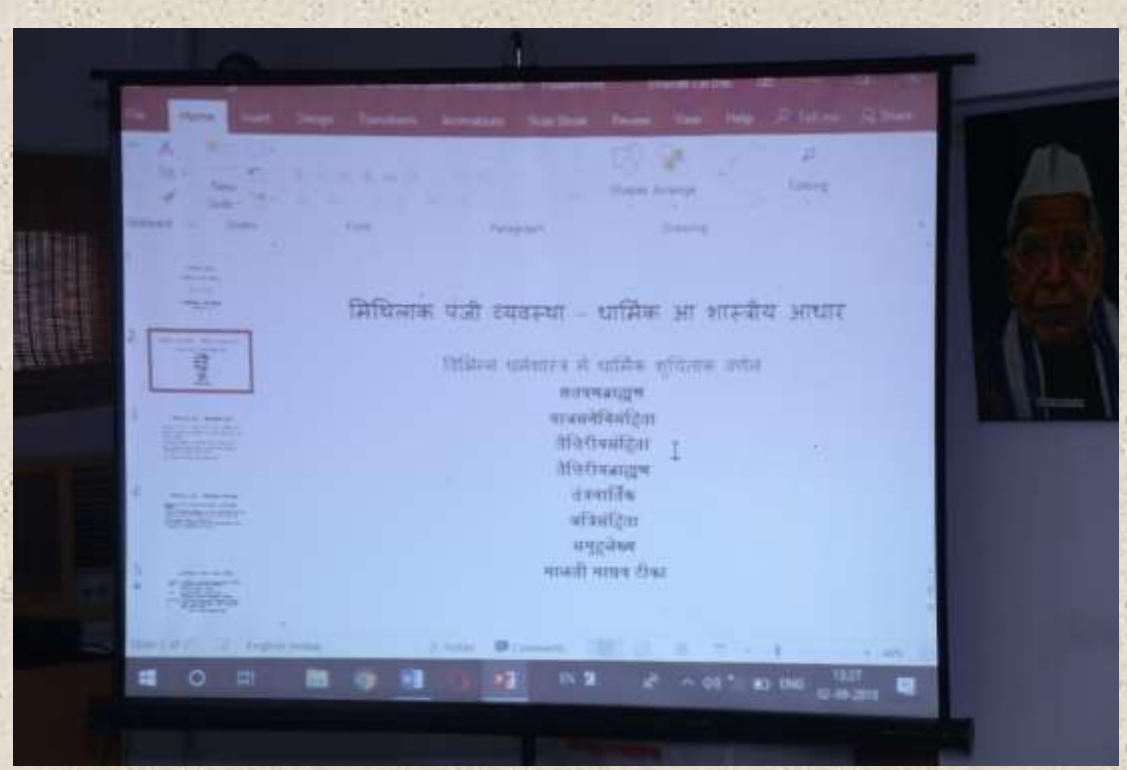

पञ्जि प्रबन्ध पर – श्री भैरब लाल दास

पञ्जि प्रबन्ध पर – श्री भैरब लाल दास

पञ्जि प्रबन्ध पर – डा0 महेंद्र नारायण राम

पञ्जि प्रबन्ध पर – श्री अभिषेक देवनरायन

डाक बचन पर – प्रो0 शशिनाथ झा

डाक बचन पर – डा0 कमल मोहन चुन्नू

डाक बचन पर – श्री महेंद्र मलंगिया

डाक बचन पर – डा0 कमल कान्त झा

डाक बचन पर – डा0 महेंद्र नारायण राम

डाक बचन पर परिचर्चा

अछिञ्जल
अछिञ्जल ACHHINJAL
धरोहर श्रृंखला

श्री अजीत आज़ाद

हकार
हकार
अछिञ्जल ACHHINJAL
कार्यालय : ग्राम- भुपट्टी, बाबूबरही, ज़िला– मधुबनी, बिहार, 847224
संपर्क–+91-9709925597, 9818460941 e-mail-achhinjal@gmail.com
धरोहर श्रृंखला : १
दिन- 16 जुलाई 2018, स्थान- वाटिका होटल , चभच्चा चौक, मधुबनी
कार्यक्रम : -
सेमिनार — 10 बजे दिन स' 3.30 बजे तक, (भोजनावकाश सहित)
विषय : मिथिलाक अमूर्त संस्कृति—डाक वचन
वक्ता — श्री महेंद्र मलंगिया, डा० कमल कान्त झा, डा० महेंद्र नारायण राम, डा० ओम प्रकाश भारती, डा० शशि नाथ झा, श्री अभिषेक देवनारायन, संचालन— काश्यप कमल
डाक वचन : संगीतमय प्रदर्शन, अजीत झा द्वारा
गपसप— अपराहन 4.30-6.00 बजे
सिनेमा आ संस्कृति
विषय पर अजय ब्रह्मात्मज (सिनेमा विशेषज्ञ) स' अजित आज़ाद जी'क गपसप
एकल नाट्य प्रस्तुति – संध्या 6.30 बजे स : समाधि भाई रामसिंह,
कथा- भीष्म साहनी, निर्देशन- राजेन्द्र जोशी, नाट्य रूपान्तरण आ अभिनय- विभा रानी
नवारम्भ पटना
एवम
रंगरेज़ मिथिला मधुबनी
@achhinjal
www.facebook.com/achhinjal.sanstha
+91-9661496395
YouTube

NBT कम्युनिटी कनेक्ट

अच्छिंजल द्वारा आयोजित एकदिवसीय सेमिनार में एकत्रित हुए देशभर के मिथिला के विद्वान

पाठ्यक्रम में पंजी प्रबंध को शामिल करने की मांग

Roushan.Jha@timesgroup.com

■ **नई दिल्ली :** मिथिलांचल में विवाह निर्धारण के लिए अहम दस्तावेज के रूप में प्रचलित 'पंजी प्रबंध' का क्षय होना विद्वानों के लिए चिन्ता का विषय है। यहां के हिन्दी भवन में अच्छिंजल संस्था की ओर से दिल्ली सरकार के मैथिली-भोजपुरी अकैडमी के सहयोग से आयोजित एकदिवसीय सेमिनार में पूरे देश भर से उपस्थित मिथिला के विद्वानों ने एकमत से इसे पाठ्यक्रम में शामिल कराने पर जोर दिया। पूरे विश्व में अनोखी 'सौराठ सभा' जहां शादी के लिए दुल्हा का शास्त्रीय परीक्षण होता है, वहां से आए पंजीकार विश्व मोहन चन्द्र मिश्र ने कहा कि विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में जब 'पंजी प्रबंध' था तब तक न्याय, मिमांसा, व्याकरण और ज्योतिष की तरह यह विधा भी विकसित होती रही। पाठ्यक्रम में हटने से अब पंजीकारों की संख्या अत्यधिक कम हो गई है जिससे मिथिला की संस्कृति और परंपरा पर खतरा उत्पन्न हो गया है।

पटना से आए भैरव लाल दास ने पंजी प्रबन्ध के अनुसार विवाह नहीं होने के नुकसान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वैज्ञानिक शोध से स्पष्ट हो चुका है कि जीन पुल की रक्षा के लिए सामाजिक समूह का ऊपरी सीमा और निम्न सीमा होना आवश्यक है अन्यथा शारीरिक और मानसिक विकृति उत्पन्न होने का खतरा हो सकता है। दास ने कहा कि पंजी प्रथा को दरकिनार कर 'अस्वजन' का निर्धारण किए बिना यदि विवाह परंपरा को रोका नहीं गया तो आनेवाले दिनों में गंभीर संकट उत्पन्न हो सकता है। सभा की अध्यक्षता करते हुए प्रसिद्ध नाटककार महेन्द्र मलंगिया ने पंजी प्रबन्ध से उत्पन्न सामाजिक दोषों को सामने रखा और कहा कि जब तक पंजी में समाज के सभी वर्गों को समान स्तर पर नहीं रखा जाएगा, इसे बचाना कठिन है। संजीव झा, ऋषि वशिष्ठ, महेन्द्र नारायण राम, अभिषेक आदि विद्वानों ने पंजी प्रबन्ध के विभिन्न आयामों पर विस्तार से चर्चा किया।

> **मिथिला में पहले पंजीकार से कुल-मूल का पता लगाए बिना लोग शादी नहीं करते थे। ऐसा करने से वर और वधू पक्ष को एक-दूसरे की असलियत का पता चलता था। लेकिन यह प्रथा अब धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है। यही वजह है कि अब कई शादियां जल्दी टूट जाती हैं। पंजी प्रथा का हर हाल में संरक्षण होना चाहिए।** – *विश्व मोहन चंद्र मिश्र, प्रसिद्ध पंजीकार*

सेमिनार के दूसरे हिस्से में मैथिली एकल नाटक सुबहा, सांगीतिक नाटक कुंवर गाथा और मैथिली नाटक नसबंदी का मंचन किया गया। अमरजी राय की ओर से निर्देशित 'नसबंदी' नाटक में समाज में व्याप्त गरीबी पर करारा प्रहार किया गया। नाटक में दिखाया गया कि किस तरह एक आदमी पैसे के लोभ में आकर नसबंदी करा लेता है।

हिंदुस्तान, बिहार

धरोहर शृंखला में मिथिला की विरासत

बाबूबरही। मिथिलांचल की सभ्यता व सांस्कृति की विरासत जो लुप्त हो रही है उसे सहेजने के वास्ते धरोहर शृंखला की दूसरी कड़ी दो सितंबर को शुरू हो रही है। शृंखला के आयोजन की तैयारी जोरों पर है। दिल्ली में इस कार्यक्रम में मिथिला के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्व पर सेमिनार, प्रेमशंकर झा की वार्ता तथा नाट्य प्रस्तुतियां होगी। इसमें देश भर के मैथिली साहित्य के विद्वान, लोक कला मर्मज्ञ, साहित्यकार आदि भाग लेंगे। यह राष्ट्रीय आयोजन दिल्ली सरकार की मैथिली व भोजपुरी अकादेमी के सहयोग से हो रही है। संयोजक यदुवीर यादव ने कहा कि आह्वान संगीत आधारित रसनचौकी पर धरोहर केन्द्रित होगी।

हिंदुस्तान, बिहार

मैथिली सिनेमा के लिए पहले दर्शक बनना जरूरी: अजय

मधुबनी | नगर संवाददाता

सेमिनार

- डाक मधुबनी के लौकही अंचल के डकही गांव के थे वासी
- मैथिली फिल्मों के कंटेंट पर और अधिक ध्यान देने की जरूरत

डाक वचन मैथिली साहित्य की अमूल्य निधि है। हमारी कृषि एवं सामाजिक-संस्कृति की थाती रहे इन वचनों को आज के संदर्भ में लोकप्रिय एवं व्याख्यायित करने की जरूरत है। डाक मिथिला के मधुबनी जिले के लौकही अंचल के डकही गांव के वासी थे जिनका काल दसवीं शताब्दी है। अछिन्जल द्वारा वाटिका होटल में डाक वचन पर आयोजित सेमिनार में वक्ताओं ने उपरोक्त विचार रखे।

डॉ. शशिनाथ झा ने तर्कों द्वारा प्रमाणित किया कि डाक एक व्यक्ति हैं न कि परम्परा। नाटककार महेन्द्र मलंगिया ने डाक को परम्परा मानते हुए उनके व्यक्ति होने की धारणा को खारिज किया। उन्होंने कई उद्धरणों से दसवीं शताब्दी से चली आ रही लोक-परंपराओं और उसमें निहित डाक वचनों के हवाले से डाक को एक परम्परा प्रमाणित किया। श्रोताओं से भरे सभागार में समारोह में आये अतिथियों का स्वागत नवारम्भ के निदेशक अजित आज़ाद ने किया जबकि पहला वक्तव्य डॉ. कमल मोहन चुन्नू ने दिया।

उन्होंने डाक वचनों की महत्ता को रेखांकित करते हुए गुजरात में प्रचलित वचनों से इसके तुलना की। डॉ. कमल कांत झा ने डाक वचनों का उल्लेख करते हुए इसकी व्याख्या की।डॉ. महेन्द्र नारायण राम ने डकही गांव की अपनी यात्रा का उल्लेख करते हुए डाक की महत्ता प्रमाणित की। इस सत्र का संचालन अछिन्जल के अध्यक्ष पवन झा ने किया। इसी सत्र में अजित झा और उनकी टोली ने डाक वचनों की आकर्षक मंचीय प्रस्तुति दी। दूसरे सत्र

मंगलवार को सेमिनार में मौजूद साहित्यकार, नाटककार व कवि।

में प्रसिद्ध फ़िल्म पत्रकार अजय ब्रम्हात्मज से सिनेमा और इसकी संस्कृति पर अजित आज़ाद ने बातचीत की। अजय ब्रम्हात्मज ने मैथिली फिल्मों के कंटेंट पर और अधिक ध्यान देने की जरूरत बताई।

उन्होंने कहा कि मैथिली में दर्शकों का अभाव है। उन्हें पहले विश्वसनीय दर्शक बनना पड़ेगा, फिर फ़िल्म खुद ब खुद चलनी शुरू हो जाएगी। यहां शूटिंग के लिए अच्छे लोकेशन हैं। सरकार को सहयोग करना चाहिए और फ़िल्म की नीति बननी चाहिए।

अंतिम सत्र में भीष्म साहनी की चर्चित कहानी समाधि भाई राम सिंह का मैथिली में एकल नाट्य प्रस्तुति विभा रानी ने दी। एक घंटे के इस नाटक में उनके अभिनय की सबने मुक्त कंठ से सराहना की। इस नामचीन अभिनेत्री की अपने नैहर में यह पहली नाट्य प्रस्तुति थी। नवारम्भ और रंगरेज मिथिला के सहयोग एवं ऋषि बशिष्ठ और यदुवीर भारती के संयोजन में हुए इस आयोजन में शहर के कई गणमान्य उपस्थित रहे।

प्रमुख लोगों में रामेश्वर निशांत, डॉ. दमन कुमार झा, चंडेश्वर खान, सतीश साजन, शैलेश झा, प्रणव नामदेय, प्रवीण भारद्वाज, दिलीप कुमार झा, सुनील झा, ब्यूटी झा, विजय मिश्र, प्रवीण सिंटू, सपना कुमारी, विजय घनश्याम, मिथिलेश चौरसिया, सुखदेव राउत, डॉ. हेमचंद्र झा, कमलेश झा, आनंद मोहन झा, दीप नारायण विद्यार्थी, सुजीत कुमार झा, सुनील यादव, सदरे आलम गौहर, अवधेश झा, प्रिया झा, प्रभाती कमलिनी, मिथिलेश देवी आदि शामिल थे। धन्यवाद ज्ञापन ऋषि बशिष्ठ ने दिया। पवन झा ने शीघ्र ही डाक वचन पर एक कार्यशाला आयोजित करने की घोषणा की।

डाक वचन पर हुए सेमिनार में विद्वानों ने डाक को मिथिला का गौरव-पुरुष बताया

संस्था रंगरेज और नवारंभ की ओर से किया गया कार्यक्रम का आयोजन, वक्ताओं ने रखे विचार

नैहर में विभा रानी की पहली नाट्य प्रस्तुति

[illegible]

[illegible]

मैथिली फिल्मों के लिए पहले दर्शक बनना जरूरी : अजय

[illegible]

विभा रानी ने दी समदिया भाई रामसिंह की एकल प्रस्तुति

[illegible]

आभार –

1. श्री महेंद्र मलंगिया
2. डा0 कमल कान्त झा
3. डा0 महेन्द्र नारायण राम
4. डा0 प्रकाश भारती
5. प्रो0 (डा0) शशि नाथ झा
6. श्री अभिषेक देवनारायन
7. श्री अजित आज़ाद
8. पञ्जिकार श्री विश्वमोहन चन्द्र मिश्र
9. श्री भैरव लाल दास
10. श्री संजीव झा
11. श्री अभिषेक देवनारायन
12. डा0 सविता झा खान
13. श्री ऋषि बशिष्ठ
14. श्री काश्यप कमल
15. श्री प्रेमशंकर झा
16. डा0 कैलाश कुमार मिश्र
17. श्री गजेंद्र ठाकुर
18. प्रो0 दमन कुमार झा
19. श्री विजय चन्द्र झा

20. प्रो0 पुष्पम नारायण
21. श्रुति प्रकाशन
22. पञ्जिकार विद्यानंद झा
23. विदेहपरिवार
24. नारी उदगार संस्थान
25. निलामणी सांस्कृतिक परिषद
26. डा0 भारती मेहता
27. श्री राम लखन राम रमण
28. सोशल मीडिया पर सक्रिय मैथिल कर्मी
29. समस्त मैथिल समाज
30. मैथिली भोजपुरी अकादेमी दिल्ली सरकार
31. नवारम्भ प्रकाशन
32. रंगरेज़ मिथिला
33. श्री कौशल कुमार
34. मैथिली फाउंडेशन

-- इति --